सांध्य दैनिक 4PM

जो हमारी निंदा करता है, उसे अपने अधिकाधिक पास ही रखना चाहिए। वह तो बिना साबुन और पानी के हमारी कमियां बता कर हमारे स्वभाव को साफ करता है। -कबीर दास

मूल्य ₹ 3/-

जिद...सच की

www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 11 ● अंकः 293 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, सोमवार 1 दिसंबर, 2025

रांची में चला रो-को का... 7 | बिहार विस चुनाव में करारी हार... 3 | एसआईआर लोगों के लिए मुसीबत... 2

संसद का शीतकालीन सत्र हंगामे के साथ शुरू

विपक्ष ने कहा संवाद की नहीं रही आस

» पहले ही दिन स्थगन प्रस्ताव का नोटिस
» प्रियंका-अखिलेश का पीएम मोदी पर प्रहार
» एकाधिकारवादी प्रक्रिया है एसआईआर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केन्द्र सरकार के शीतकालीन सत्र की शुरूआत हंगामे के साथ हुई। कांग्रेस सांसद मणिकम टैगोर ने आज लोकसभा में एक स्थगन प्रस्ताव पेश किया है। वहीं पीएम मोदी के बयान पर कांग्रेस सासंद प्रियंका गांधी व सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने उन पर पलटवार किया है। साथ ही लोक सभा कई बार हंगामे की वजह से बाधित होती रही। इस बीच राज्य सभा में नए उप सभापति का अभिनंदन किया गया।

बतादें प्रस्ताव में देश के 12 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में चल रही एसआईआर प्रक्रिया को तुरंत रोकने की मांग की गयी है। टैगोर ने इसे अभूतपूर्व संकट से जोड़ते हुए गंभीर सवाल उठाएं हैं। उन्होंने अपने नोटिस कहा है कि चुनाव आयोग द्वारा लागू की गई यह प्रक्रिया एकतरफा, तानाशाही और बिना किसी तैयारी के शुरू कर दी गई है। उन्होंने आरोप लगाया कि आयोग ने न तो शिक्षकों से कोई चर्चा की और न राज्यों के साथ समन्वय किया और न ही जनता की परेशानियों का ध्यान रखा। टैगोर ने अपने प्रस्ताव में कहा कि यह एसआईआर प्रक्रिया एक एकाधिकारवादी, अचानक लागू की गई और अत्यधिक दबाव वाली कवायद बन चुकी है।

चंडीगढ़ यूनियन टेरेटरी को संविधान के आर्टिकल 240 के दायरे में लाया जाएगा

संविधान में संसोधन से जुड़ा बिल भी इसी सत्र में पेश हो सकता है। बिल के जरिये संविधान में 131वां संशोधन करने का प्रस्ताव रखा जाएगा। इस बिल के तहत खासकर चंडीगढ़ यूनियन टेरेटरी को संविधान के आर्टिकल 240 के दायरे में लाया जाएगा। आर्टिकल 240 के तहत केंद्र सरकार केंद्रशासित प्रदेशों के लिए रेगुलेशन बना सकती है, जिन्हें कानून का दर्जा प्राप्त होता है। यही नहीं कंपनियों के खिलाफ विवाद का जल्द निपटारा हो सके इसके लिए कंपनियों और व्यक्तियों के बीच झगड़े अक्सर सालों कोर्ट में लटकते रहते हैं। ऑर्बिट्रेशन एंड कॉन्सीलिएशन (अमेंडमेंट) बिल, 2025 का उद्देश्य है कि मध्यस्थता फैसलों को चुनौती देने की प्रक्रिया सरल हो और झगड़ों का समाधान तेजी से हो सके।

मणिपुर जीएसटी विधेयक लोकसभा में पेश

स्थगन के बाद लोकसभा की कार्यवाही फिर शुरू हो गई है। हालांकि एसआईआर के मुद्दे पर विपक्ष का हंगामा अभी भी जारी है। हंगामे के बीच ही वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने मणिपुर गुड्स एंड सर्विस टैक्स (दूसरा संशोधन) विधेयक सदन में पेश किया।

19 दिन में 13 प्रस्ताव आएंगे

संसद का शीतकालीन सत्र 1 दिसंबर से 19 दिसंबर तक चलेगा। 19 दिन तक चलने वाले पूरे सत्र के दौरान 15 बैठकें आयोजित होंगी। इस सत्र में एटॉमिक एनर्जी बिल समेत 10 नए बिल पेश हो सकते हैं। लोकसभा बुलेटिन में के मुताबिक एटॉमिक एनर्जी बिल में प्राइवेट कंपनियों को भी न्यूक्लियर पॉवर प्लांट लगाने की अनुमति मिल सकेगी। हॉयर एजुकेशन कमीशन बनाने वाला बिल भी तैयार हो चुका है। इस बिल के माध्यम से सरकार का उद्देश्य कॉलेज और यूनिवर्सिटी को अधिक फ्रीडम देना और सिस्टम को पारदर्शी बनाना है।

पीएम का बयान सिर्फ पाखंड : जयराम

कांग्रेस ने भी पीएम मोदी पर पलटवार किया है। देश की मुख्य विपक्षी पार्टी ने आरोप लगाया कि प्रधानमंत्री का संसद सत्र की शुरुआत से पहले बयान देना सिर्फ पाखंड है क्योंकि वह खुद सदन में मौजूद नहीं होते और विपक्ष से संवाद नहीं करते। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने यह दावा भी किया कि संसद में किसी गतिरोध के लिए खुद प्रधानमंत्री जिम्मेदार हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सोमवार को विपक्ष पर निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि वह संसद को चुनावी हार के बाद हताशा निकालने का मंच बना रहा है।

राज्यसभा में खरगे के बयान पर हंगामा

राज्यसभा में नेता विपक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने कहा, मुझे उम्मीद है कि आपको बुरा नहीं लगेगा कि मुझे आपके पहले वाले के राज्यसभा के चेयरमैन के ऑफिस से पूरी तरह से अचानक जाने का जिक्र करना पड़ रहा है... मुझे दुख हुआ कि सदन को उन्हें विदाई देने का मौका नहीं मिला। फिर भी, पूरे विपक्ष की ओर से मैं उनके स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं। खरगे के बयान पर सत्ता पक्ष ने आपत्ति जताई, जिसे लेकर सदन में हंगामा हुआ।

सरकार चर्चा के लिए तैयार : चिराग

केंद्रीय मंत्री चिराग पासवान ने कहा, पिछला सत्र आप देख लीजिए जिस तरीके से SIR का एक मुद्दा लेकर पूरा सदन वॉशआउट कर दिया। उसी तरह का असार इस सत्र में भी देखने को मिल रहा है...सरकार पूरी तरह से तैयार हैं जिस पर वो चर्चा करना चाहते हैं हम जरूर हर विषय पर चर्चा करेंगे। लेकिन विपक्ष की जिम्मेदारी बनती है कि सदन की गरिमा बनाए रखे और सत्र को चलने दें।

मुद्दों पर बोलना और उन्हें उठाना ड्रामा नही : प्रियंका

प्रियंका गांधी वाड्रा ने पीएम मोदी के बयान पर पलटवार किया है। पीएम मोदी ने सत्र शुरू होने से पहले कहा कि सदन में ड्रामा नहीं डिलीवरी होनी चाहिए। इसी मुद्दे पर रिएक्ट करते हुए प्रियंका गांधी ने कहा कि मुद्दों पर बोलना और उन्हें उठाना ड्रामा नहीं है। कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि चुनाव की स्थिति, SIR और प्रदूषण बहुत बड़े मुद्दे हैं। आइए उन पर चर्चा करें। संसद किस लिए है? यह ड्रामा नहीं है। मुद्दों पर बोलना और उन्हें उठाना ड्रामा नहीं है। ड्रामा का मतलब है कि चर्चा न होने देना। प्रियंका वाड्रा ने ये बातें पीएम मोदी के उस कमेंट पर दी जो उन्होंने संसद के शीतकालीन सत्र की शुरुआत से पहले कही थी।

पीएम मोदी ने विपक्ष पर किया कटाक्ष

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को मीडिया को संबोधित करते हुए साफ कहा कि संसद परिसर में ड्रामा करने की बहुत जगहें बाहर हैं, लेकिन सदन में हंगामे की कोई जगह नहीं है। उन्होंने कहा कि सदन में ड्रामा नहीं डिलीवरी होनी चाहिए। उन्होंने सभी राजनीतिक दलों, खासकर विपक्ष से अपील की कि वे सत्र को सुचारू और गरिमामय तरीके से चलाने में सहयोग दें। इसी के जवाब में वायनाड से कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने कहा कि मुद्दों पर बोलना और उन्हें उठाना ड्रामा नहीं है।

एसआईआर लोगों के लिए मुसीबत बनी : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख बोले- भाजपा के इशारे पर काम कर रहा है चुनाव आयोग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने भाजपा सरकार व चुनाव आयोग पर करारा वार किया है। सपा प्रमुख ने कहा कि एसआईआर लोगों के लिए मुसीबत का सबब बन गई है। अखिलेश ने जारी बयान में कहा कि उत्तर प्रदेश जैसे बड़े प्रदेश में एक महीने के अंदर लगभग 16 करोड़ मतदाताओं की गणना और सत्यापन संभव नहीं है।

बीएलओ पर काम का अतिरिक्त दबाव है, जिसका असर उनकी शारीरिक व मानसिक स्थिति पर पड़ता दिखाई दे रहा है। उन्होंने कहा कि इन स्थितियों में यह आशंका होती है कि चुनाव आयोग को अपनी साख, चुनाव की निष्पक्षता और पारदर्शिता की परवाह नहीं रह गई है। वह

भाजपा सरकार के इशारे पर काम करने वाली संस्था बन गई है।

बिहार में लाखों लोग मताधिकार से वंचित किए गए

बिहार में एसआईआर के दौर में लाखों लोग मताधिकार से वंचित रह गए। शक यही होता है कि कहीं उत्तर प्रदेश में भी होने वाले चुनावों के मद्देनजर विपक्षियों के वोट काटने की साजिश तो नहीं हो रही है। सपा अध्यक्ष ने कहा कि अभी तक उत्तर प्रदेश में आधा दर्जन से ज्यादा बीएलओ की मौत हो चुकी है। मतदाता वोट डालने से वंचित न रहें, इसके लिए चुनाव आयोग को भाजपा की किसी भी साजिश से सावधान रहना चाहिए।

एसआईआर के लिए बढ़ाया गया समय पर्याप्त नहीं

आयोग ने 4 दिसंबर से 11 दिसंबर तक एसआईआर का समय बढ़ाकर कोई अपेक्षित काम नहीं किया है। समाजवादी पार्टी ने एसआईआर की समयावधि तीन महीने बढ़ाने की मांग की थी। इस व्यवहारिक और उचित मांग पर चुनाव आयोग ने कोई ध्यान नहीं दिया। उसे मतदाताओं की परेशानियों से कोई लेना-देना नहीं है।

संसद के दोनों सत्र शान्तिपूर्ण तरीके से संचालित हों : मायावती

» बसपा प्रमुख बोलीं- आरोप-प्रत्यारोप से काम नहीं चलेगा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। संसद के शीतकालीन सत्र की आज 1 दिसंबर से शुरुआत हो रही हैं. लेकिन एसआईआर के मुद्दे को लेकर विपक्ष हंगामा कर सकता है, ऐसे में इस सत्र के भी हंगामेदार रहने के आसार है। इस बीच बसपा सुप्रीमो मायावती ने सत्र को सुव्यवस्थित तरीके से चलाने की मांग की है ताकि जनहित के मुद्दों पर चर्चा हो सके।

बसपा सुप्रीमो मायावती ने अपने आधिकारिक सोशल मीडिया अकाउंट एक्स पर पोस्ट कर लिखा- संसद का शीतकालीन सत्र आज से शुरू हो रहा है, जिसके हर सत्र की तरह इस बार भी काफी हंगामेदार होने की संभावना व्यक्त की जा रही है, किन्तु हमारी पार्टी चाहती है कि संसद के दोनों सत्र सुव्यवस्थित व शान्तिपूर्ण तरीके से संचालित हों। देश व जनहित के जरूरी और अहम मुद्दों में भी खासकर राजधानी दिल्ली आदि में वायु प्रदूषण के कारण आ रही भारी परेशानी तथा वोटर लिस्ट के सघन रिवीज़न अर्थात् एसआईआर. को लेकर व्यावहारिक तौर पर हो रही परेशानियों एवं आपत्तियों व इस कार्य के मुख्य कर्ताधर्ता बीएलओ की दिक्कतों तथा उनके द्वारा की जा रही खुदकुशी आदि की दुखद घटनाओं पर सही से चर्चा हो सके और इनका उचित समाधान निकलने की दिशा में सार्थक प्रयास हो सके। केवल आरोप-प्रत्यारोप लगाने से काम नहीं चलेगा, बल्कि व्यापक देश व जनहित साधने हेतु संसद को सुचारू रूप से चलाने के लिये सत्ता और विपक्ष दोनों को राजनीतिक स्वार्थ से ऊपर उठकर पूरी तरह से संवेदनशील एवं गंभीर होने की ज़रूरत है, यही आग्रह।

केरल के सीएम विजयन को नोटिस पर बवाल

» ईडी ने मसाला बॉन्ड मामले में कारण बताओ नोटिस भेजा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोच्चि। ईडी ने केरल के सीएम विजयन को नोटिस भेजा। इसके बाद से राज्य में सियासी बवाल मचा है। सत्ता पार्टी ने भाजपा के केंद्र सरकार को विपक्षी नेताओं पर दबाव बनाने का आरोप लगाया है।

बता दें प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने केआईआईएफबी मसाला बॉन्ड मामले में केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन, पूर्व वित्त मंत्री थॉमस इसाक और मुख्यमंत्री के प्रधान सचिव के. एम. अब्राहम को 466 करोड़ रुपये का फेमा कारण बताओ नोटिस जारी किया है। अधिकारियों ने सोमवार को यह जानकारी दी। ईडी ने विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा) के प्रावधानों के तहत यह नोटिस करीब 10-12 दिन पहले जारी किया था। इसमें व्यक्तिगत रूप से पेश होने की आवश्यकता नहीं होती है। फेमा मामले में जांच पूरी होने के बाद कारण बताओ नोटिस जारी किया जाता है। यह

जांच केआईआईएफबी द्वारा मसाला बॉन्ड के माध्यम से 2,000 करोड़ रुपये जुटाने और फेमा मानदंडों के अनुपालन से संबंधित है। केआईआईएफबी (केरल इन्फ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट फंड बोर्ड) बड़ी और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए राज्य सरकार की प्राथमिक एजेंसी है और इसने राज्य में बड़ी व महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए 50,000 करोड़ रुपये जुटाने की अपनी योजना के तहत 2019 में अपने पहले मसाला बॉन्ड 'इश्यू' के जरिए से 2,150 करोड़ रुपये जुटाए थे। मसाला बॉन्ड भारत के बाहर जारी किये जाने वाले बॉन्ड होते हैं, लेकिन स्थानीय मुद्रा के बजाय इन्हें भारतीय मुद्रा में जारी किया जाता है।

भाजपा नेताओं को जानकारी लीक कर रहा है चुनाव आयोग : चंद्रिमा भट्टाचार्य

तृणमूल कांग्रेस बोली- खून से सने हैं मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के हाथ

» तृणमूल ने दावा किया कि पिछले एक महीने में पश्चिम बंगाल में बीएलओ सहित कम से कम 40 लोगों की जान गई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। तृणमूल कांग्रेस ने निर्वाचन आयोग पर भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के नेताओं को ''चुनिंदा सूचनाएं लीक'' करने का आरोप लगाया और उसे भाजपा का ही ''विस्तारित निकाय'' करार दिया। तृणमूल ने दावा किया कि पिछले एक महीने में पश्चिम बंगाल में जारी मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) से संबंधित तनाव के कारण चार बीएलओ सहित कम से कम 40 लोगों की जान चली गई। उसने आरोप लगाया कि इन मौतों के लिए निर्वाचन आयोग जिम्मेदार है और मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के ''हाथ खून से सने हैं।

वरिष्ठ तृणमूल नेताओं ने सवाल उठाया कि विपक्ष के नेता शुभेंदु अधिकारी ने अगले

साल होने वाले विधानसभा चुनावों के दौरान चरणों की संख्या की ''भविष्यवाणी'' और यह घोषणा कैसे की कि एसआईआर प्रक्रिया में एक करोड़ लोगों के नाम हटा दिए जाएंगे। वरिष्ठ मंत्री चंद्रिमा भट्टाचार्य ने दावा किया कि अधिकारी जैसे भाजपा नेताओं ने कहा कि राज्य में चुनाव 2021 की तरह आठ चरणों के बजाय दो से तीन चरणों में कराए जा सकते हैं। उन्होंने कहा, ''अगर निर्वाचन आयोग वास्तव में स्वायत्त है, तो भाजपा नेता चरणों की संख्या या एसआईआर के समय के बारे में इतने विश्वास के साथ कैसे बोल सकते हैं?'' तृणमूल सांसद पार्थ भौमिक ने कहा कि पहले दिन से ही शुभेंदु अधिकारी और अन्य भाजपा नेताओं ने बार-बार यह दावा करके आम लोगों में डर की भावना पैदा की है कि राज्य में मतदाता सूची से एक करोड़ नाम हटा दिए जाएंगे।

भौमिक ने कहा, ''उन्हें यह आंकड़ा कैसे पता चला? निर्वाचन आयोग हमारे सवालों का जवाब देने के बजाय, भाजपा की दुष्प्रचार मशीन को चुनिंदा जानकारी लीक करने में व्यस्त है। आयोग एक तटस्थ संस्था के रूप में काम करने के बजाय भाजपा के विस्तारित निकाय के रूप में काम कर रहा है।'' हालांकि, निर्वाचन आयोग के अधिकारियों ने कहा कि वे नेताओं द्वारा किए गए दावों पर टिप्पणी नहीं कर सकते।

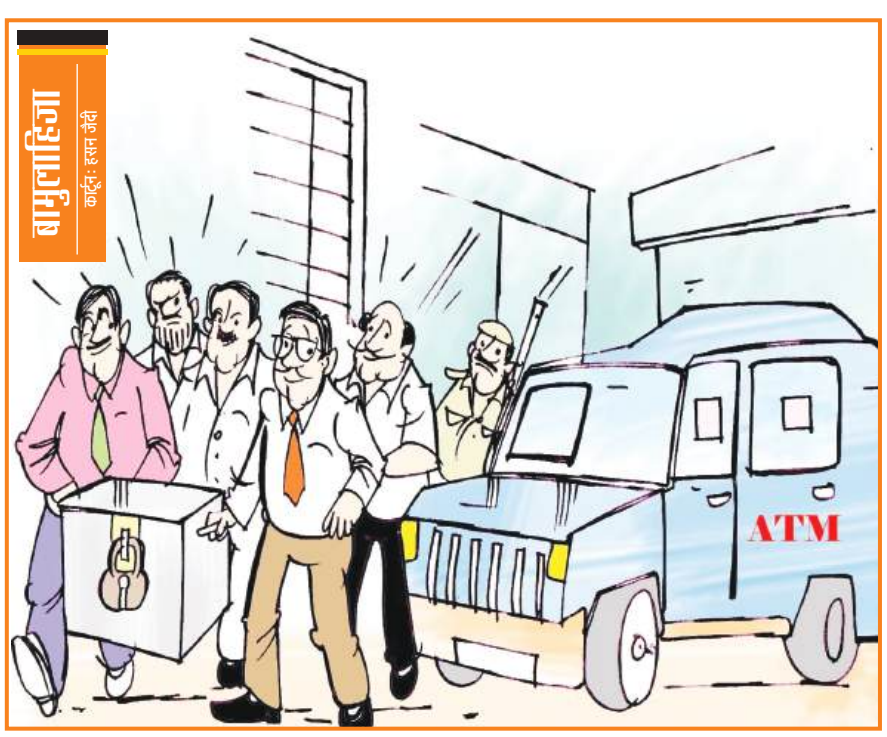

हम कहां से चुनाव लड़ेंगे नहीं बताएंगे : बृजभूषण

» पूर्व सांसद बोले- छह महीने पहले जनता खोलेगी पत्ता

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गोंडा। कैसरगंज से पूर्व सांसद बृजभूषण शरण सिंह ने वर्ष 2029 के लोकसभा चुनाव को लेकर बयान देते हुए साफ कहा कि वह कहां से चुनाव लड़ेंगे, इसका फैसला वह नहीं बल्कि जनता करेगी। उन्होंने कहा कि चुनाव में कहां से उतरूंगा, इसका पत्ता मैं नहीं खोलूंगा, यह जनता छह महीने पहले खोलेगी। जनता ही बताएगी कि हम कहां से लड़ेंगे और लड़ेंगे भी या नहीं।

पूर्व सांसद ने कहा कि वह भले ही फिलहाल संसद में न हों, मगर आज भी देश के करीब दस जनपदों से लोग दिल्ली आकर अपनी समस्याएं उनके सामने रखते हैं। कहा कि मैं रोज लोगों

की समस्याएं सुनता हूं, अधिकारियों से बात करता हूं। जो संभव होता है, उसमें मदद करता हूं। संसद में न होते हुए भी मेरा जुड़ाव जनता से बना हुआ है। पूर्व सांसद ने कहा कि पिछला चुनाव लड़ने के लिए जनता ने उन्हें फिर से सांसद बनाना चाहा था, लेकिन परिस्थितियों के चलते पार्टी को अलग निर्णय लेना पड़ा। मेरी जगह मेरे बेटे को सांसद बनाया गया। अब मैं क्या करूं? आने वाले समय में देखेंगे कि किस क्षेत्र में जनता अपने जनप्रतिनिधि से खुश नहीं है और कहां अत्याचार ज्यादा हो रहे हैं। मतदाता सूची पुनरीक्षण को लेकर पूछे गए सवाल पर बृजभूषण शरण सिंह ने कहा कि उन्होंने अपना फॉर्म भर दिया है। जनता से अपील के सवाल पर उन्होंने कहा कि जिसको वोट देना हो, वह फॉर्म भरे। जिसे नहीं देना हो, वह न भरे। यह हर नागरिक की अपनी समझ है। सिराथू की विधायक पल्लवी पटेल द्वारा फॉर्म न भरने संबंधी बयान पर पूर्व सांसद ने तंज कसते हुए कहा कि वह तो राजा हैं। आज देश और प्रदेश में राजा बहुत पैदा हो रहे हैं।

बिहार विस चुनाव में करारी हार के बाद मंथन का दौर

नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने हार की जिम्मेदारी ली

» इंडिया गठबंधन ने प्रारंभ की चर्चा

» राजद और कांग्रेस अपने-अपने खेमें में समीक्षा करने में जुटे

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बिहार विधानसभा चुनाव में करारी हार के बाद इंडिया गठबंधन ने हार कारणों पर मंथन आरंभ कर दिया है । इसी क्रम उसके सहयोगी दलों ने अपनी अलग बैठकें की। कांग्रेस की दिल्ली में हुई समीक्षा बैठक में आरजेडी के साथ एलाइंस, संगठन की गुटबाजी, गलत टिकट बंटवारा, फ्रेंडली फाइट, सीमांचल में ओवैसी फैक्टर और एसआईआर (स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन) प्रक्रिया जैसे मुद्दों पर नेताओं का गुस्सा खुलकर सामने आया।

दिल्ली में हुई बिहार कांग्रेस की समीक्षा बैठक में कई नेताओं ने आरजेडी के साथ गठबंधन को खुलकर हार की बड़ी वजह बताया। उधर कांग्रेस सांसद व नेता प्रतिपक्ष राहुलगांधी ने हार की जिम्मेदारी ली है। कुछ नेताओं ने यहां तक कहा कि अगर आरजेडी से गठबंधन नहीं होता तो पार्टी की स्थिति इतनी खराब नहीं होती। आरोप लगा कि आरजेडी के कारण सीट बंटवारे और सिंबल जारी करने में इतना समय लगा कि कैंपेन शुरू ही नहीं हो पाया। 11 सीटों पर इस वजह से फ्रेंडली फाइट हुई और सभी पर नुकसान हुआ। कुछ नेताओं ने सुझाव दिया कि फिलहाल RJD से गठबंधन पर दोबारा विचार किया जाना चाहिए और कांग्रेस को अपनी ताकत बढ़ाने पर फोकस करना चाहिए।

ओवैसी की पार्टी की वजह से बंटा महागठबंधन का वोट

सीमांचल से नेता मुसव्विर आलम ने कहा कि ओवैसी फैक्टर ने महागठबंधन के वोट को बंटा दिया और ओवैसी तथा बीजेपी ने मिलकर ऐसा नैरेटिव तैयार किया जिसका असर सीमांचल से लेकर बिहार के दूसरे जिलों तक पड़ा। प्रदेश अध्यक्ष राजेश राम ने बताया कि लगभग सभी प्रत्याशियों ने एक स्वर में कहा कि एसआईआर प्रक्रिया का इस्तेमाल वोट चोरी के लिए किया गया। मॉडल कोड ऑफ कंडक्ट लागू होने के बावजूद कई जगह पैसे बांटे गए, वोट प्रभावित किए गए और SIR के नाम पर बड़े पैमाने पर वोटों में हेराफेरी हुई।

सीमांचल में एआईएमआईएम की मौजूदगी का असर

सीमांचल में एआईएमआईएम की मौजूदगी से मुस्लिम वोट के बिखरने और महागठबंधन को नुकसान पहुंचने की बात भी सामने आई। बैठक से पहले राहुल गांधी ने सभी नेताओं से कहा था कि किसी पर व्यक्तिगत आरोप न लगाएं, बल्कि अपने-अपने क्षेत्र की सच्चाई और हार की वजहें को ईमानदारी से बताएं। राहुल, खड़गे और के.सी. वेणुगोपाल ने 10-10 के बैच में सभी प्रत्याशियों, सांसदों और वरिष्ठ नेताओं से विस्तृत रिपोर्ट ली और पूरी प्रक्रिया देर मीटिंग खत्म होने तक चली।

नए बनाम पुराने उम्मीदवारों पर भिड़े कांग्रेस नेता

बैठक शुरू होने से पहले ही वैशाली से प्रत्याशी रहे इंजीनियर संजीव सिंह और नए उम्मीदवार जितेंद्र के बीच नए बनाम पुराने नेताओं को लेकर तीखी बहस हो गई। संजीव सिंह ने कहा कि 18 नए लोगों को टिकट देने का फैसला गलत था और इसी से पार्टी हारी। इस पर जितेंद्र भड़क गए और दोनों के बीच काफी कहासुनी हुई, जिसके बाद वरिष्ठ नेताओं ने बीच-बचाव किया। इस दौरान गाली गलौज के आरोप भी लगे। उस वक्त बिहार कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता मौजूद थे।

अलग-अलग समूहों में उम्मीदवारों से फीडबैक

पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी की मौजूदगी में हुई इस बैठक में बिहार के सभी 61 प्रत्याशियों के साथ-साथ राज्य के कांग्रेस सांसद भी शामिल हुए। दिल्ली के इंदिरा भवन में हुई इस बैठक में राहुल गांधी और खड़गे ने प्रत्याशियों को अलग-अलग समूहों में बुलाकर उनसे हार के कारण पूछे और पूरा फीडबैक नोट किया। बैठक में कई नेताओं ने आरोप लगाया कि टिकट बंटवारे में पारदर्शिता नहीं रही, उम्मीदवारों को अंतिम समय में प्रतीक दिया गया और फ्रेंडली फाइट ने कांग्रेस प्रत्याशियों का नुकसान किया।बारारी से उम्मीदवार तौकीर आलम ने टिकट बंटवारे को जिम्मेदार बताते हुए कहा कि वह अपनी मूल सीट पर तैयारी कर रहे थे लेकिन उन्हें आखिरी समय में बारारी भेज दिया गया और अगर उनका नाम 10- 15 दिन पहले घोषित होता तो वे क्षेत्र को कवर कर सकते थे। उन्होंने बताया कि इतने कम समय में भी 97,000 वोट मिले लेकिन जीत नहीं मिली।

कन्हैया कुमार को प्रचार में ना उतारने का मुद्दा उठा

बथनाहा विधानसभा के उम्मीदवार नवीन कुमार ने बताया कि उन्होंने राहुल गांधी को बताया कि कैसे मैनिपुलेशन हुआ, कैसे वोट चोरी और खरीद-फरोख्त हुई और कैसे कुछ जगह वोट 10,000 रुपए तक में खरीदे गए। बैठक में कन्हैया कुमार को चुनाव में सक्रिय रूप से इस्तेमाल न करने का मुद्दा भी उठा और नेताओं ने कहा कि जिन चेहरों की बिहार में व्यापक अपील है, उन्हें किनारे रखने से संगठन कमजोर पड़ा।

सपा ने 27 के लिए कसी कमर

बदली रणनीति से विधानसभा चुनावों में उतरने की तैयारी

» छोटे दलों और सामाजिक संगठनों पर रहेगा फोकस

» पीडीए व एसआईआर के सहारे भाजपा को चोट देने की तैयारी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। यूपी में आगमी 27 में होने वाले विधान सभा चुनाव के लिए सभी सियासी ने कमर कस लिया है। खास तौर से राज्य कीसबसे बड़ी विपक्ष पार्टी ने अभी से सारे समीकरण तय तोड़ करने प्रारंभ कर दिए है। सपा ने उत्तर प्रदेश में छोटे दलों और सामाजिक संगठनों को साथ लाने की विशेष रणनीति तैयार की है।

आगामी विधानसभा चुनाव के मद्देनजर इन दलों व संगठनों के साथ मजबूत संबंध बनाने का फैसला किया है। हालांकि, उसके पहले होने वाले पंचायत चुनाव में इन संगठनों के प्रभाव का आकलन किया जाएगा। सपा सूत्रों के मुताबिक, ये ऐसे दल हैं, जिनका प्रदेश स्तर पर तो कोई दखल नहीं है, लेकिन किसी जिला या तहसील स्तर पर खासा प्रभाव है। गाजियाबाद के अपनी जिंदगी-अपना दल और कानपुर की राष्ट्र उदय पार्टी के नेता लगातार सपा के संपर्क में हैं।

प्रदेश के अलग-अलग हिस्सों में स्थानीय स्तर पर सक्रिय

भारतीय मानव समाज पार्टी, पिछड़ा दलित विकास महासंघ, गांधीयन पीपुल्स पार्टी, राष्ट्रीय भागीदारी पार्टी, अति पिछड़ा समाज महासभा, राष्ट्रीय भागीदारी पार्टी, कंज्युमर प्रोटेक्शन एंड राईट काउंसिल आदि संगठनों के प्रतिनिधि पिछले दिनों सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव से मुलाकात भी कर चुके हैं। सपा के रणनीतिकारों का मानना है कि इसका फायदा उन्हें आने वाले चुनाव में जरूर मिलेगा।

चुनावी तैयारियों पर चर्चा की

सपा द्वारा जारी एक बयान के मुताबिक, यादव ने औरैया जिले के पार्टी नेताओं के साथ चुनावी तैयारियों पर चर्चा की। बातचीत के दौरान, यादव ने कहा कि अगर जाति जनगणना शुरू की जाती है तो आरक्षण ठीक से लागू होगा और 'पीडीए' (पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक) समुदाय की एकता और ताकत लोगों की समस्याओं का समाधान करेगी। उन्होंने कहा कि पीडीए सदस्यों की कड़ी मेहनत से ही पार्टी ने 2024 के लोकसभा चुनावों में प्रदेश में सबसे ज्यादा सीटें जीतीं। सपा प्रमुख ने भाजपा सरकार पर समाज में नफरत फैलाकर समानता, स्वतंत्रता और भाईचारे को कमजोर करने का आरोप लगाया।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

क्लाइमेट चेंज परफॉर्मेंस इंडेक्स में भारत को झटका

पर्यावरण के मामले में भारत को झटका लगा है। क्लाइमेट चेंज परफॉर्मेंस इंडेक्स की ताजा रिपोर्ट ने भारत की रैंकिंग गिर गई है। संयुक्तराष्ट्र जलवायु सम्मेलन में पर्यावरण संगठन जर्मनवॉच, न्यूक्लाइमेट इंस्टीट्यूट और क्लाइमेट एक्शन नेटवर्क इंटरनेशनल द्वारा जारी इस वार्षिक मूल्यांकन में भारत 10वें स्थान से लुढ़ककर 23वें स्थान पर पहुंच गया है। यह अब तक की सबसे बड़ी गिरावट है। सबसे बड़ी विडंबना यह है कि नवीकरणीय ऊर्जा में भारत वैश्विक औसत से बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। हमने 2030 के अपने लक्ष्य से पांच साल पहले ही बिजली उत्पादन क्षमता का 50 प्रतिशत गैर-जीवाश्म स्रोतों से हासिल कर लिया है, सौर रूफटॉप क्षमता 20.8 गीगावाट पर पहुंच गई है। फिर भी रैंकिंग में भारी गिरावट दर्ज की गई है, इसका सीधा जवाब है-कोयले की जकड़न व उससे जुड़ी राजनीति। सीसीपीआई चार मापदंडों पर 63 देशों और यूरोपीय संघ का मूल्यांकन करता है, जिसका आधार ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन (40 फीसदी), नवीकरणीय ऊर्जा (20 फीसदी), ऊर्जा उपयोग (20 फीसदी) और जलवायु नीति (20 फीसदी) रहता है। शीर्ष तीन स्थान इसलिए खाली हैं क्योंकि कोई भी देश बहुत उच्च श्रेणी में नहीं पहुंच सका।

डेनमार्क चौथे स्थान पर है। भारत ग्रीनहाउस उत्सर्जन, ऊर्जा उपयोग और जलवायु नीति में मध्यम श्रेणी में है, लेकिन नवीकरणीय ऊर्जा में निम्न रेटिंग मिली है, यह पिछले साल की तुलना में काफी नीचे है। गिरावट का सबसे बड़ा कारण है कोयले पर निर्भरता और कोल फेज-आउट की कोई राष्ट्रीय समयबद्ध योजना का अभाव। देश में ऊर्जा खपत तेजी से बढ़ रही है क्योंकि अर्थव्यवस्था 8 प्रतिशत की दर से बढ़ रही है। 1.5 डिग्री से कम तापमान वृद्धि के लिए जरूरी है कि उत्सर्जन शिखर पर पहुंच जाए, लेकिन भारत में यह अब तक नहीं हुआ है। रिपोर्ट में सबसे तीखी आलोचना जलवायु नीति पर है। 2070 का नेट-जीरो लक्ष्य 1.5 डिग्री पाथवे से मेल नहीं खाता। 2035 और 2040 के लिए कोई बाध्यकारी अंतरिम लक्ष्य निर्धारित नहीं हैं। कोई पीक कोल ईयर या फेज-आउट डेट नहीं है। जी-20 में भारत उन कुछ देशों में है जहां फॉसिल सब्सिडी अब भी भारी भरकम है। ये आंकड़े चौंकाते हैं क्योंकि भारत ने सौर गठबंधन की अगुवाई की है, 500 गीगावाट नवीकरणीय क्षमता का लक्ष्य रखा है। लेकिन यह प्रगति बिजली क्षेत्र तक सीमित है। भारत अब भी अमरीका, रूस या सऊदी अरब से काफी बेहतर स्थिति में है।

“ सबसे बड़ी विडंबना यह है कि नवीकरणीय ऊर्जा में भारत वैश्विक औसत से बेहतर प्रदर्शन कर रहा है। हमने 2030 के अपने लक्ष्य से पांच साल पहले ही बिजली उत्पादन क्षमता का 50 प्रतिशत गैर-जीवाश्म स्रोतों से हासिल कर लिया है, सौर रूफटॉप क्षमता 20.8 गीगावाट पर पहुंच गई है। फिर भी रैंकिंग में भारी गिरावट दर्ज की गई है, इसका सीधा जवाब है-कोयले की जकड़न व उससे जुड़ी राजनीति।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

भविष्य के मिशनों के लिए खतरा अंतरिक्ष का कचरा

मुकुल व्यास

कल्पना कीजिए कि आप पृथ्वी का चक्कर लगा रहे एक स्पेस स्टेशन पर फंस गए हैं और घर वापसी के लिए कोई यान मौजूद नहीं है। चीन के तीन अंतरिक्ष यात्री इस समय इसी स्थिति का सामना कर रहे हैं। पिछले कुछ दिनों से तीनों अंतरिक्ष यात्री तियांगोंग स्पेस स्टेशन पर फंसे हुए हैं। उनके पास वापसी के लिए कोई ठीक-ठाक यान उपलब्ध नहीं है। उनके पास जो एकमात्र यान मौजूद था, वह नवंबर की शुरुआत में अंतरिक्ष मलबे से टकरा गया था, जिससे यान का व्यूइंग पोर्ट टूट गया था। चीन की मैन्ड स्पेस एजेंसी (सीएमएसए) ने एक बयान में कहा कि टक्कर का कारण अंतरिक्ष मलबे का एक छोटा-सा टुकड़ा था। पिछले दो सालों में यह दूसरा मौका है जब अंतरिक्ष यात्री अंतरिक्ष में फंसे हैं।

नासा के अंतरिक्ष यात्री बुच विल्मोर और सुनीता विलियम्स अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन पर नौ महीने फंसे रहने के बाद इस साल मार्च में सुरक्षित रूप से पृथ्वी पर वापस आ गए थे। नासा के अंतरिक्ष यात्रियों को सिर्फ आठ दिन तक अंतरिक्ष स्टेशन पर रुकना था लेकिन रिटर्न क्राफ्ट में तकनीकी समस्याओं के कारण उन्हें मजबूरन नौ महीने तक अंतरिक्ष में रखना पड़ा। अंतरिक्ष मिशन के दौरान अंतरिक्ष यात्रियों का इस तरह फंसना बहुत चिंता की बात है। अंतरिक्ष में सक्रिय देशों ने अंतरिक्ष अन्वेषण के लिए कई मिशन भेजने की योजनाएं बनाई हैं। इनमें मानव मिशन भी शामिल हैं। अंतरिक्ष में फंसने की नवीनतम घटना यह दर्शाती है कि अंतरिक्ष में मिशनों के सफल संचालन के लिए अंतरिक्ष कबाड़ की समस्या को हल करना कितना जरूरी है। जैसे-जैसे पृथ्वी की कक्षा मलबे से भर रही है, टकराव का खतरा तेजी से एक बड़ी समस्या बनता जा रहा है। वर्ष 2021 में मलबा अंतर्राष्ट्रीय अंतरिक्ष स्टेशन से टकराया था, जिससे रोबोटिक आर्म के एक हिस्से को नुकसान पहुंचा था। हाल के सालों में अंतरिक्ष स्टेशन को कई बार उड़ते हुए अंतरिक्ष कचरे से बचना पड़ा है। पृथ्वी से छोड़े जाने वाले उपग्रहों की संख्या बढ़ने से अंतरिक्ष में मलबा भी तेजी से जमा हो रहा है।

मलबे के लगभग 30,000 टुकड़े इस समय पृथ्वी की परिक्रमा कर रहे हैं। इनमें हजारों छोटे टुकड़े शामिल नहीं हैं जिन्हें ट्रैक नहीं किया जा सकता। ये निश्चित रूप से किसी उपग्रह या अंतरिक्ष स्टेशन को नुकसान पहुंचाने के लिए पर्याप्त रूप से खतरनाक हैं। यह सारा कचरा एक गंभीर खतरा पैदा कर

रहा है। अगर हम अंतरिक्ष को साफ नहीं रखेंगे, तो भविष्य के मिशनों के रास्ते में रुकावट आ सकती है या वे बंद हो सकते हैं। इनमें मौसम उपग्रह, जीपीए सिस्टम, इंटरनेट सेवाएं और अंतरिक्ष यात्राएं शामिल हैं। अंतरिक्ष में बढ़ती अराजकता पर नियंत्रण पाने के लिए यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी ने 'अंतरिक्ष पर्यावरण स्वास्थ्य सूचकांक' प्रस्तुत किया है जो यह दर्शाता है कि अगले 200 वर्षों में पृथ्वी की कक्षा कितनी स्वस्थ या तनावग्रस्त रहेगी। यह सवाल पूछा जा सकता है कि एजेंसी ने 200 वर्ष का समय क्यों चुना? अंतरिक्ष का कचरा अपने आप गायब नहीं होता। यह अंतरिक्ष में बना रहता है और तेज गति से पृथ्वी का चक्कर लगाता है। इससे और दशकों या सदियों तक टक्कर का जोखिम बढ़ जाता है। यह नया सूचकांक वर्तमान अंतरिक्ष गतिविधियों के दीर्घकालिक प्रभाव को एक अंक में दर्शाने के लिए बनाया गया है। इसका मकसद हमारी अंतरिक्ष गतिविधियों के प्रभाव का आकलन करने के लिए एक साझा भाषा को बढ़ावा देना है। यह सूचकांक केवल यह नहीं गिनता कि कितने उपग्रह प्रक्षेपित किए गए हैं। यह उन प्रमुख कारकों पर भी गौर करता है जो यह प्रभावित करते हैं कि किसी मिशन से कक्षीय पर्यावरण में कितना जोखिम पैदा होगा। इन कारकों में वस्तु का आकार और आकृति, कक्षा में रहने का समय और दुर्घटनाओं से बचने की क्षमता शामिल है। इसके अलावा सूचकांक इस बात पर भी विचार करता है कि किसी वस्तु का काम पूरा होने के बाद उसे विस्फोट से बचाने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं और उसके और अधिक मलबे में विखंडित होने की कितनी संभावना है। इन सभी कारकों को एक स्कोर में बदल दिया जाता है जो यह दर्शाता है कि कोई मिशन भविष्य में टकराव या कबाड़ के जोखिम को कितना बढ़ाता है।

इस मामले में कम स्कोर का अर्थ है कि मिशन ज्यादा परेशानी नहीं पैदा करेगा, जबकि उच्च स्कोर का मतलब इसके विपरीत है। इसे एक फ्रिज के लिए ऊर्जा-दक्षता लेबल की तरह समझा जा सकता है। भविष्य में उपग्रह मिशनों को अंतरिक्ष में उनकी स्वच्छता के आधार पर ए से एफ तक रेटिंग दी जा सकती है। अंतरिक्ष की सेहत पहले से ही खतरे में है। वैज्ञानिकों ने शुरुआत में 2014 के अंतर्राष्ट्रीय दिशानिर्देशों का उपयोग करके एक 'स्वस्थ' कक्षीय वातावरण के लिए आधार रेखा निर्धारित की थी।

साझा सहमति में ही जलवायु परिवर्तन का विकल्प

ज्ञानेंद्र रावत

विगत दिनों ब्राजील के बेलेम में संयुक्त राष्ट्र जलवायु सम्मेलन कॉप-30 सम्पन्न हो गया। सम्मेलन के अंत में, जैसी पहले से उम्मीद थी, सभी देशों का मिलकर काम करने का संकल्प लेना संभव नहीं दिखा। सम्मेलन के आखिरी दिन जीवाश्म ईंधन को चरणबद्ध तरीके से खत्म करने को लेकर जो खींचतान हुई, वह दुनिया को आश्वस्त करने की दिशा में विश्वसनीय नहीं प्रतीत हुई। यही नहीं, सम्मेलन में अनिश्चितता का आलम यह रहा कि जीवाश्म ईंधन से जुड़ी वैश्विक योजना का उल्लेख पहले ड्राफ्ट में किया गया था, जिसे बाद में संशोधित ड्राफ्ट से हटा दिया गया। इससे यह साफ हो गया कि जीवाश्म ईंधन का मुद्दा आने वाले दौर में भी अनसुलझा ही रहेगा। जैसा कि 11 नवम्बर को सम्मेलन की शुरुआत में यह उम्मीद बंधी थी कि सम्मेलन में भाग लेने वाले दुनियाभर के देश ग्लोबल वार्मिंग के खिलाफ किसी ठोस नतीजे पर पहुंच जाएंगे, आखिरकार सम्मेलन जिस मुकाम पर पहुंचा, उसने साबित कर दिया कि वैश्विक तापमान वृद्धि को नियंत्रित करने के मामले में सम्मेलन कुछ भी करने में नाकाम रहा।

इसके बावजूद सम्मेलन में हुई जलवायु वार्ता को कई मायनों में अभूतपूर्व कहा जा रहा है। इसका अहम कारण यह रहा कि सम्मेलन में मौजूद दुनियाभर के 194 देशों ने तमाम तरह के मतभेदों, तनावों और अमेरिका की गैर-मौजूदगी के बावजूद एक ऐसे पैकेज पर सहमति दर्ज की। गौरतलब है कि जलवायु मुद्दे पर इसे बेलेम पॉलिटिकल पैकेज की संज्ञा दी जा रही है। उम्मीद है कि यह पैकेज वैश्विक तापमान वृद्धि को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने की राह आसान करेगा। दरअसल, दुनियाभर के 194 देशों की जलवायु मुद्दे पर एकमत से सहमति यह जाहिर करती है कि अब जलवायु मुद्दा वैश्विक नेतृत्व का सवाल नहीं रह गया है और न ही यह नैतिक मुद्दा है, बल्कि अब यह आर्थिक सुरक्षा और विकास का भी सवाल बन चुका है। इसमें कोई संदेह नहीं कि आज दुनिया बेहद गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही है।

इसके बावजूद, अधिकांश देशों ने वैश्विक तापमान वृद्धि को दो डिग्री सेल्सियस के नीचे रखने और 1.5 डिग्री सेल्सियस के लक्ष्य को लेकर अपेक्षित गंभीरता नहीं दिखाई है। तेजी से बढ़ता हुआ कार्बन उत्सर्जन और तापमान में वृद्धि मानव अस्तित्व के लिए गंभीर खतरे की घंटी बनते जा रहे हैं। इसके पीछे प्रमुख कारण विकसित देशों का अपनी कार्बन उत्सर्जन में कमी लाने के प्रति संजीदगी से काम न करना है। जबकि इन देशों को अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करते हुए निर्धारित समय सीमा से पहले 'नेट जीरो' लक्ष्य हासिल करने की दिशा में कदम उठाना चाहिए था, क्योंकि इन देशों का कार्बन उत्सर्जन में सबसे बड़ा योगदान है। यह जानते हुए कि अब हमारे पास समय बहुत कम बचा है और पेरिस समझौते को प्रभावी रूप से लागू करना अत्यंत आवश्यक है, मुख्य रूप से तीन सवालों पर विचार करना जरूरी है। पहले, दुनियाभर के देशों द्वारा जलवायु कार्रवाई को कैसे आगे बढ़ाया जा सकता है। दूसरे, तकनीक, राहत राशि और वित्तीय सहायता उन देशों तक कैसे पहुंचाई जा सकती है, जो इससे सबसे अधिक प्रभावित हैं और जिन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता है।

तीसरे, जलवायु कार्रवाई को समग्र और समावेशी तरीके से कैसे लागू किया जा सकता है। इन तीन प्रश्नों के मध्य ही समग्र जलवायु समाधान की दिशा तलाशनी होगी। मौजूदा देशों ने यह स्वीकार किया कि विकासशील देशों के हितों को प्राथमिकता देना अब समय की आवश्यकता है। खासकर, जलवायु परिवर्तन से प्रभावित गरीब देशों के लिए फंड के आवंटन को लेकर सम्मेलन में सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया गया कि इन देशों को मौसम के कहर से निपटने के लिए तीन गुना अधिक वित्तीय सहायता दी जाएगी। इसके अलावा, विकसित देशों से यह अपील की गई कि वे 2035 तक जलवायु परिवर्तन के प्रभावों से निपटने के लिए गरीब देशों को दी जाने वाली राशि को कम से कम तीन गुना बढ़ा दें। हालांकि, अधिकतर देशों ने जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए एकजुट होने की कोशिश की, लेकिन अमीर और विकासशील देशों, साथ ही तेल, गैस और कोयला उद्योग से जुड़े देशों के बीच मतभेद बने रहे। ये मतभेद उनके पुराने दृष्टिकोण को दर्शाते हैं, और यह साफ दिखता है कि इन मुद्दों पर वे अभी भी अपनी स्थिति से पूरी तरह अडिग हैं। इसके अलावा, जंगलों की सुरक्षा जैसे अहम मुद्दे पर आम सहमति न बन पाने के कारण यह भी अनसुलझा ही रह गया। भारत का यह दृढ़ मत रहा है कि विकसित देशों को तय अवधि से पहले 'नेट जीरो' लक्ष्य तक पहुंचना चाहिए।

उनको भारत से सबक लेना चाहिए जो अपने विकास कार्यक्रम और पर्यावरण संरक्षण पहल को साथ-साथ आगे बढ़ा रहा है। इसी का परिणाम है कि भारत 2070 की समय सीमा से पहले ही नेट जीरो का लक्ष्य हासिल कर लेगा। भारत ने सम्मेलन को आश्वस्त किया कि वह संशोधित एनडीसी साल 2035 तक समय पर घोषित कर देगा। हकीकत यह है कि जलवायु संकट बढ़ाने में जीवाश्म ईंधन कोयला, गैस और तेल अभी भी सबसे बड़े जिम्मेदार हैं और जैसा कि आशा थी कि सम्मेलन में जीवाश्म ईंधन की मजबूत लॉबी जीवाश्म ईंधन के इस्तेमाल को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने के रोडमैप जारी होने में अड़ंगा लगाएगी और वह अंतत: अपने मकसद में कामयाब भी रही। बेलेम से यह साफ संकेत दिया गया कि दुनिया की ऊर्जा की कहानी अब पहले जैसी नहीं रही, वह अब बदल रही है। कुल मिलाकर बेलेम से निकली हवा ने साफ कर दिया है कि दुनिया भले पहले से कहीं ज्यादा विभाजित है, लेकिन जलवायु कार्रवाई पर बनी सहमति यह संकेत देती है कि साझा संकट साझा समाधान चाहता।

ठंड के मौसम में कई तरह की सब्जियां मिलती हैं जिनका प्रयोग टेस्टी सूप बनाने में कर सकते हैं

वेजिटेबल सूप

इस मौसम में सर्दी-जुकाम, गले में खराश और खांसी जैसी समस्याएं आम देखने को मिलती है। इनसे बचने के लिए रोजाना गर्मा-गर्म सूप का सेवन करें। वहीं अगर आपके गले में खराश या खांसी है तो सूप में हल्की-सी काली मिर्च डाल लें। आप इस सूप को बनाने के लिए अपनी मनपसंद सब्जियों का भी चुनाव कर सकते हैं। वेजिटेबल सूप बनाने के लिए एक पैन गर्म करें, इसमें 1 बड़ा चम्मच तेल डालें। इसके बाद बारीक कटे हुए प्याज, गाजर डालें और 10 मिनट तक भूनें। फिर इसमें मनपसंद दाल डालकर कुछ देर तक भून लें। इसमें पानी डालें उबाल आने तक इसे पकाएं। जब सब्जी और दाल नरम हो जाए, तो गैस बंद कर दें।

टोमेटो सूप

टमाटर के सूप में मौजूद विटामिन C और कैरोटीनॉयड आपकी प्रतिरक्षा प्रणाली को उत्तेजित करने में मदद करते हैं। कहीं-कहीं तो इसका उपयोग सामान्य सर्दी-जुकाम के घरेलू उपचार के रूप में भी किया जाता है। यह एंटीऑक्सिडेंट में भी समृद्ध है जो प्रतिरक्षा प्रणाली की रक्षा करता है। इस सूप को बनाने के लिए प्याज और गाजर को काट लें। इसके अलवा 1 किलो टमाटर को मोटा-मोटा काट लें। एक पैन में 2 बड़े चम्मच तेल गर्म करें और उसमें तेज पत्ते डालकर नरम होने तक भून लें। अब कटे हुए प्याज, टमाटर और गाजर डालें। इसे पकने के छोड़ दें, फिर स्वादानुसार नमक मिलाएं। इस मिश्रण को अच्छी तरह चलाएं। तैयार है टोमेटो सूप।

सर्दियों में शरीर को गर्म रखेंगे ये सूप

सर्दियों में हमारे शरीर को गर्म रखने के लिए कई तरह की चीजें डाइट में शामिल करना चाहिए। आप इस मौसम में सूप भी पी सकते हैं, जो शरीर को गर्म रखने के साथ सर्दी-जुकाम और खांसी से राहत दिलाने में मदद करेंगे। ठंड के मौसम में कई तरह की सब्जियां मिलती हैं। जिनका इस्तेमाल कर आप टेस्टी सूप बना सकते हैं। इनमें भरपूर मात्रा में फाइबर, विटामिन्स और मिनरल पाए जाते हैं। सूप पीने से इम्यून सिस्टम मजबूत होता है।

सूप में भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं विटामिन्स और मिनरल

ब्रोकली और पालक का सूप

सबसे पहले प्याज, लहसुन और ब्रोकली को काट लें। इसके अलावा थोड़ा-सा पालक भी काटकर रख लें। अब एक पैन गर्म करें, इसमें तेल डालें, फिर कटी हुई सब्जियां डालकर भून लें। इसके बाद नमक और काली मिर्च डालें शोरबा के लिए आवश्यकतानुसा पानी मिलाएं। इसे ढककर पकाएं। नींबू का रस मिलाकर सूप का मजा लें।

दाल का सूप

एक पैन में पानी गर्म करें, अब इसमें 2 बड़े चम्मच चना दाल डालें। इसके बाद कटा हुआ प्याज, हरी मिर्च डालें। फिर इसमें नमक मिक्स करें। इसे अच्छी तरह पकाएं। जब यह तैयार हो जाए, तो गैस बंद कर दें। अब इसमें नींबू का रस मिक्स करें और दाल के सूप का आनंद लें। फोलिक एसिड, जो बच्चे के मस्तिष्क और रीढ़ की हड्डी में जन्म के समय होने वाली असामान्यताओं को रोकने में मदद करता है, चना दाल में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। इसके अतिरिक्त, फोलिक एसिड शरीर की लाल रक्त कोशिकाओं की संख्या में वृद्धि में योगदान देता है, जो बच्चे के विकास के लिए महत्वपूर्ण है। अगर आप इम्यूनिटी बढ़ाना चाहते हैं, तो आपको मूंग दाल के सूप का सेवन करना चाहिए। क्योंकि मूंग दाल के सूप में पाया जाने वाला विटामिन्स इम्यूनिटी को बढ़ाने में मदद करता है, जिससे आपका मौसमी बीमारियों से बचाव होता है।

हंसना मना है

दो महिलाएं एक फंक्शन में गईं। वहां पहली महिला जिस भी जगह बैठने लगती है तो दुसरी महिला उसकी बैठने की जगह को अपने दुपट्टे से साफ कर देती है। तकरीबन पांच-दस बार ऐसा हुआ। तब किसी ने दूसरी महिला से पूछा कि तू खुद की बजाय, इस औरत की जगह क्यों साफ कर रही है? तो वो महिला बोली, क्या करूं बहना? ये मेरी जेठानी है! और ये आज मेरी साड़ी पहन कर आई है।

गांव में आधार कार्ड बन रहा था। कम्प्यूटर ऑपरेटर ने एक महिला से पूछा- तुम्हारे घरवाले का क्या नाम है? ये कॉलम भरना है। महिला बोली— हमारे यहां घरवाले का नाम नहीं लिया जाता। ऑपरेटर- कुछ हिंट दो मैं भर देता हूं। महिला बोली— 3 गंजी 3 गंजी। ऑपरेटर चकरा गया। तभी बगल में खड़ा एक लड़का बोला— छगनजी?

नर्सों की नियुक्ति के इंटरव्यू में पूछा गया- 'जुड़वां बच्चे किस वजह से पैदा होते हैं? 'उसी वजह से, जिस से एक बच्चा पैदा होता है।' एक उम्मीदवार ने उत्तर दिया।

प्रेमिका-'मेरी बड़ी इच्छा है कि अगले जन्म में मैं चांद बनूं तुम्हारी। प्रेमी-'और मैं इस चंद्रमा पर उतरने वाला प्रथम अंतरिक्ष यात्री।

कहानी | लोमड़ी और सारस की दावत

बहुत पुरानी बात है, एक जंगल में एक लोमड़ी और एक सारस रहते थे। ये दोनों बहुत अच्छे दोस्त थे। सारस रोजाना लोमड़ी को तालाब से मछली पकड़ कर खाने के लिए देता था। इस प्रकार दोनों की दोस्ती बहुत गहरी होती चली गई। सारस बहुत सीधा साधा था, लेकिन लोमड़ी बहुत शैतान और चालाक थी। वह हमेशा दूसरों को परेशान किया करती थी। उसे दूसरों का अपमान करने और मजाक उड़ाने में बहुत मजा आता था। एक दिन उसने सोचा कि क्यों न एक बार सारस का भी अपमान किया जाए और उसका मजाक उड़ाया जाए। ऐसा सोचकर उसने सारस को दावत पर बुलाया। उसने जान बूझकर सूप एक प्लेट में परोसा। उसे पता था कि सारस प्लेट में से सूप को नहीं पी सकता। उसे सूप न पीता देख लोमड़ी मन ही मन बहुत खुश हुई और झूठी चिंता दिखाते हुए सारस से पूछने लगी कि क्या बात है मित्र सूप पसंद नहीं आया क्या? सारस बोला नहीं मित्र, यह तो बहुत स्वादिष्ट है। सारस ने जब देखा कि सूप को प्लेट में परोसा गया है और लोमड़ी जान बूझकर उससे सवाल कर रही है, तो वह सब समझ गया, लेकिन कुछ नहीं बोला। उस दिन सारस को अपमान सहने के साथ ही भूखा भी रहना पड़ा, लेकिन जाते-जाते सारस ने भी उसे अपने यहां दावत पर बुलाया और लोमड़ी दूसरे ही दिन सारस के घर दावत पर पहुंच गई। सारस ने भी दावत में सूप बनाया था और लोमड़ी के साथ लंबी चोंच वाले अन्य पक्षियों को भी बुलाया था। सारस ने सूप को सुराही में परोसा। सुराही का मुंह इतना छोटा था कि उसमें बस चोंच ही अंदर जा सकती थी। लोमड़ी पूरा टाइम सुराही और अन्य सभी पक्षियों को सूप पीते देखती रही। इसी बीच सारस ने पूछा कि क्या बात है मित्र सूप अच्छा नहीं लगा क्या, लोमड़ी को अचानक अपने शब्द याद आ गए। सभी बोले कि सूप बहुत स्वादिष्ट है। लोमड़ी को भी सभी की हां में हां मिलाना पड़ा। यह सब देख लोमड़ी अपने आप में बहुत अपमानित महसूस कर रही थी, लेकिन कुछ कह नहीं सकी।

7 अंतर खोजें

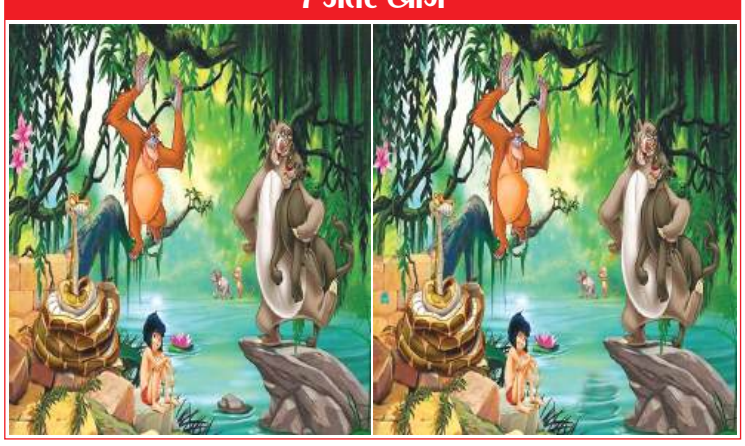

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष

जीवनसाथी से सहयोग प्राप्त होगा। कारोबार में वृद्धि होगी। नौकरी में अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। पुराना रोग बाधा का कारण बन सकता है। पारिवारिक चिंता बनी रहेगी।

वृषभ

रुके हुए कार्यों में गति आएगी। घर-बाहर सभी अपेक्षित कार्य पूर्ण होंगे। दूसरों के कार्य की जवाबदारी न लें। वाणी पर नियंत्रण रखें। अपेक्षित कार्यों में विलंब हो सकता है।

मिथुन

नौकरी में अधिकार बढ़ सकते हैं। छोटे भाइयों का सहयोग प्राप्त होगा। प्रसन्नता रहेगी। संचित कोष में वृद्धि होगी। प्रमाद न करें। प्रतिद्वंद्विता में वृद्धि होगी।

कर्क

मनपसंद भोजन का आनंद प्राप्त होगा। लेन-देन में सावधानी रखें। शत्रुओं का पराभव होगा। विवाद को बढ़ावा न दें। भय रहेगा। प्रमाद न करें। लाभ के अवसर हाथ आएंगे।

सिंह

व्यवसाय ठीक चलेगा। आय में निश्चितता रहेगी। मातहतों से अनबन हो सकती है। कुसंगति से हानि होगी। पारिवारिक समस्याओं में इजाफा होगा।

कन्या

सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। नौकरी में अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। किसी बड़े काम करने की योजना बनेगी। व्यवसाय लाभप्रद रहेगा।

तुला

जोखिम उठाने का साहस कर पाएंगे। सुख के साधन जुटेंगे। पराक्रम बढ़ेगा। घर में मेहमानों का आगमन होगा। दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

वृश्चिक

व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। नौकरी में उच्चाधिकारी की प्रसन्नता प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। निवेश शुभ रहेगा। पार्टनरों का सहयोग प्राप्त होगा।

धनु

वाणी पर नियंत्रण रखें। दूसरों के कार्य में दखल न दें। अपेक्षित कार्यों में विलंब होगा। आय में निश्चितता रहेगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। प्रमाद न करें।

मकर

व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। किसी के व्यवहार से स्वाभिमान को चोट पहुंच सकती है। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। नौकरी में अनुकूलता रहेगी। राजभय रहेगा।

कुम्भ

सभी तरफ से सफलता प्राप्त होगी। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। व्यापार में वृद्धि होगी। आय बढ़ेगी। घर में प्रसन्नता रहेगी। ऐश्वर्य पर व्यय हो सकता है। प्रतिष्ठा बढ़ेगी।

मीन

व्यापार लाभदायक रहेगा। नौकरी में चैन रहेगा। निवेश शुभ रहेगा। किसी वरिष्ठ व्यक्ति का सहयोग प्राप्त होगा। बेचैनी रहेगी। चोट व रोग से बचें। विवेक से कार्य करें।

पहले ही दिन लाखों में सिमटी विजय-फातिमा की गुस्ताख इश्क

विजय वर्मा और फातिमा सना शेख की रोमांटिक ड्रामा गुस्ताख इश्क28 नवंबर को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है, विभु पुरी द्वारा निर्देशित यह फिल्म 1990 के दशक में सेट की गई है, जिसमें कविता, पुरानी यादें और पुराने ज़माने का रोमांस दिखाया गया है, हालांकि, इस फिल्म को बॉक्स ऑफिस पर धनुष और कृति सेनन की तेरे इश्क में से क्लैश करना पड़ा है ऐसे में जानते हैं गुस्ताख इश्क़ ने रिलीज के पहले दिन कितने करोड़ से ओपनिंग की है? गुस्ताख़ इश्क़ को बॉक्स ऑफिस पर पहले दिन बेहद ठंडा रिस्पॉन्स मिला है। वैसे फिल्म का रिलीज से पहले दी कोई खास बज नहीं था। इसके अलावा इसे कृति सेनन और धनुष की इंटेंस रोमांटिक ड्रामा तेरे इश्क़ में पहले ही दिन कड़ा मुकाबला करना पड़ा जिसके चलते विजय वर्मा और फातिमा की ये फिल्म ओपनिंग डे पर फीकी साबित हुई है। शॉकिंग बात ये है कि ये पहले दिन ही लाखों में सिमट गई।

सैकनिल्क की अर्ली ट्रेड रिपोर्ट के मुताबिक गुस्ताख़ इश्क़ ने अपने पहले दिन सिर्फ़ 50 लाख रुपये कमाए हैं। हालांकि ये शुरुआती आंकड़े हैं ऑफिशियल डाटा आने के बाद इनमें थोड़ा बहुत बदलाव हो सकता है। गुस्ताख़ इश्क़ की कुल हिंदी ऑक्यूपेंसी 8.61% रही।

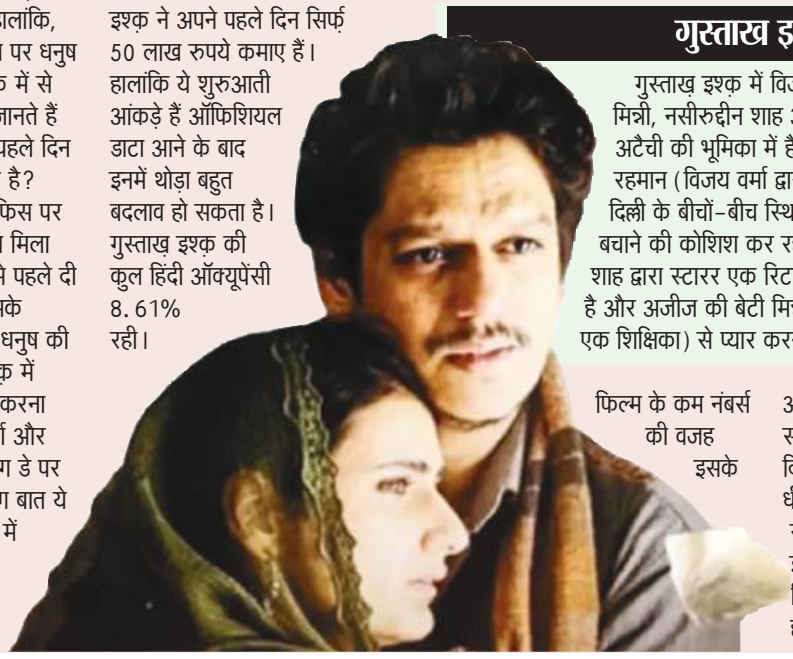

फिल्म के कम नंबर्स की वजह इसके आनंद एल राय की तेरे इश्क़ में के साथ क्लैस के कारण है, जिसने उसी दिन 16।50 करोड़ रुपये कमा। धीमी शुरुआत के बावजूद, वीकेंड पर सारी निगाहें टिकी हैं। अगर गुस्ताख़ इश्क़ को पॉजिटिव वर्ड ऑफ माउथ मिलता है तो इसकी कमाई में बढ़ोतरी हो सकती है।

गुस्ताख इश्क स्टार कास्ट

गुस्ताख़ इश्क़ में विजय वर्मा नवाबुद्दीन, फातिमा सना शेख मिन्नी, नसीरुद्दीन शाह अजीज/बब्बा और शारिब हाशमी अटैची की भूमिका में हैं। गुस्ताख इश्क नवाबुद्दीन सैफुद्दीन रहमान (विजय वर्मा द्वारा अभिनीत) की कहानी है, जो पुरानी दिल्ली के बीचों-बीच स्थित अपने पिता के प्रिंटिंग प्रेस को बचाने की कोशिश कर रहा है। इस प्रोसेस में, वह नसीरुद्दीन शाह द्वारा स्टारर एक रिटायर्ड कवि अजीज का शिष्य बन जाता है और अजीज की बेटी मिन्नी (फातिमा सना शेख द्वारा अभिनीत एक शिक्षिका) से प्यार करने लगता है।

सनी देओल की रिश्तेदार बनने जा रही हैं दीपिका पादुकोण

दीपिका पादुकोण फैमिली में जल्द ही शहनाई बजने वाली है। क्योंकि, एक्ट्रेस की बहन अनीशा शादी के बंधन में बंध जाएंगी। बता दें अनीशा दुबई के एक बिजनेसमैन के संग सगाई कर चुकी हैं और जल्द सात फेरे लेने वाली हैं। इसी बीच अनीशा के मंगेतर को लेकर एक खास खबर सामने आई है।

रिपोर्ट के अनुसार अनीशा का कनेक्शन देओल परिवार से जुड़ने वाला है। खासकर वो सनी देओल के बड़े बेटे के परिवार का हिस्सा बनने जा रही हैं। चलिए जानते हैं दीपिका का होने वाला दूल्हा कौन है। दरअसल, अनीशा की शादी रोहन आचार्य से होने वाली है। बता दें, रोहन आचार्य की बहन दृशा की शादी सनी देओल के बड़े बेटे करण देओल से हुई है। इस रिश्ते का मतलब है कि अनीशा की रोहन संग शादीके बाद दीपिका और उनका परिवार भी देओल परिवार का हिस्सा बन जाएगा। रोहन आचार्य, बिमल रॉय के परपोते हैं।

बिमल की बहू चिम्मू आचार्य रोहन और दृशा आचार्य की मां हैं। रोहन दुबई में रहने वाले एक बिजनेसमैन हैं जो अपने परिवार के साथ काम करते हैं। अनीशा और रोहन एक-दूसरे को सालों से जानते हैं। अनीशा की बात करें तो वो एक पूर्व गोल्फ खिलाड़ी हैं, जिन्होंने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व किया है। फिलहाल अनीशा द लिव लव लाफ फाउंडेशन की सीईओ हैं, जिसकी स्थापना उनकी बहन दीपिका ने 2015 में की थी। इस फाउंडेशन का उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य के बारे में जागरूकता बढ़ाना है।

बॉलीवुड | मन की बात

एआई किसी भी तरह से क्रिएटिविटी की जगह नहीं ले सकता : जावेद

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। इसको लेकर कई लोग काफी चिंताएं प्रकट कर रहे हैं। हालांकि, दिग्गज गीतकार और स्क्रिप्ट राइटर जावेद अख्तर का मानना है कि एआई नेचुरल क्रिएटिविटी की जगह कभी भी नहीं ले सकता। उनका मानना है कि एआई की अपनी सीमाएं हैं और यह सिर्फ डेटा पर आधारित है। 'क्रिएटिविटी की जगह नहीं ले सकता एआई', जावेद अख्तर बोले- सिर्फ डेटा पर आधारित है आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एआई के लगातार बढ़ते प्रभाव के बीच अब जावेद अख्तर ने इस पर अपनी राय दी है। उन्होंने इसे मानव क्रिएटिविटी के लिए किसी भी तरह के खतरे के होने से इंकार किया है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस यानी एआई का प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। इसको लेकर कई लोग काफी चिंताएं प्रकट कर रहे हैं। हालांकि, दिग्गज गीतकार और स्क्रिप्ट राइटर जावेद अख्तर का मानना है कि एआई नेचुरल क्रिएटिविटी की जगह कभी भी नहीं ले सकता। उनका मानना है कि एआई की अपनी सीमाएं हैं और यह सिर्फ डेटा पर आधारित है। एक लिट्रेसी फेस्टिवल में बोलते हुए जावेद अख्तर ने कहा कि मैं यह नहीं कह सकता कि भविष्य में क्या होगा। लेकिन अभी के लिए मुझे यकीन है कि एआई किसी भी तरह से इंसान की क्रिएटिविटी की जगह नहीं ले सकता। एआई में कोई दिमाग नहीं है। यह इस बात पर निर्भर करता है कि आप इसका उपयोग कैसे करते हैं। परमाणु ऊर्जा का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि इसका उपयोग अच्छे और बुरे दोनों उद्देश्यों के लिए किया जा सकता है। गीतकार ने आगे कहा कि एआई में संसाधन बुरे नहीं हैं। अगर आप इतिहास में झांकेंगे, तो लोग सभी खोजों से डरते थे। यहां तक कि भाप के इंजन से भी और इसे शैतान का वाहन बताते थे। वर्तमान में एआई की सीमाएं हैं और यह आंकड़ों पर निर्भर है। भविष्य में क्या होगा, यह अभी नहीं कहा जा सकता।

ट्रेन में सीट बेल्ट क्यों नहीं होती, क्या सुरक्षा की नहीं होती चिंता, एक्सपर्ट ने बताई वजह

ट्रैवल करने के कई तरीकों में सीट बेल्ट जरूरी होती है। कार, प्लेन और कई जगहों पर तो बसों में भी सीट बेल्ट होती है। पर क्या आपने कभी सोचा है कि ट्रेन में सीट बेल्ट क्यों नहीं होती? चाहे पैसेंजर ट्रेन हो, एक्सप्रेस ट्रेन हो, छोटी दूरी की ट्रेन हो या लंबी दूरी की उनमें सीट बेल्ट दिखाई नहीं देती। यूं तो सीट बेल्ट को सुरक्षा के लिए जरूरी माना जाता है, पर हैरानी इस बात की है कि जब ट्रेन, कार से भी तेज चलती है, तो उसमें सीट बेल्ट क्यों नहीं होती? रीडर्स डायजेस्ट की रिपोर्ट के अनुसार परिवहन सुरक्षा विशेषज्ञ थॉमस बार्थ ने इसके बारे में गहराई से बताया। थॉमस बार्थ, जो नेशनल ट्रांसपोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड के पूर्व सर्वाइवल फैक्टर इन्वेस्टिगेटर रहे हैं, बताते हैं कि ट्रेन में सीट बेल्ट न होने का सबसे बड़ा कारण यह है कि उनकी ज्यादातर स्थितियों में जरूरत ही नहीं पड़ती। उनका कहना है, ट्रेनों का वातावरण इतना नियंत्रित होता है कि सामान्य परिस्थितियों में सीट बेल्ट की आवश्यकता नहीं होती। बार्थ के अनुसार, कार, बस और हवाई जहाज़ की तुलना में ट्रेन एक नियंत्रित ट्रैक पर चलती है। उसके ड्राइवर यानी लोको पायलट ट्रेंड होते हैं, उन्हें उसका संचालन करना आता है। ट्रेनों में टक्कर की ताकत (कैश फोर्स) भी कम होती है विशेषज्ञ बताते हैं कि किसी वाहन की टक्कर का असर इस बात पर निर्भर करता है कि वह कितनी तेजी से रुकता है। कार यदि किसी दीवार से टकराती है तो तुरंत रुक जाती है और जोरदार टक्कर का असर होता है। इसके विपरीत ट्रेन भारी और लंबी होती है, इसलिए हल्की बाधाओं से टकराने पर भी उसमें झटका कम महसूस होता है। इसलिए, यात्रियों पर कैश फोर्स का प्रभाव कार की तुलना में कम पड़ता है।

अजब-गजब | इस समुदाय की है अजीबो-गरीब परंपरा

युवक को शादी के काबिल तब तक नहीं माना जाता जब तक कि उस पर केस न दर्ज हो जाय

मध्य प्रदेश के गुना जिले में पारदी समाज के युवक की मौत पुलिस कस्टडी में हो गई। पुलिस ने जिस समय युवक को हिरासत में लिया वह घोड़ी चढ़ने जा रहा था। दूल्हे के रूप से तैयार होकर वह अपनी दुल्हनियां को लेने जाने वाला था, लेकिन इससे पहले पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद पुलिस हिरासत में उसकी मौत हो गई। युवक गुना जिले के पारदी समाज के ताल्लुक रखता था। उसकी मौत के बाद समाज से जुड़ी जो परंपराएं सामने आईं वो काफी चौंकाने वाली हैं।

गुना समेत प्रदेश के अन्य जिलों में बसे पारदी समाज में महिलाओं और पुरुषों के लिए कई परंपराएं हैं, जिनका सभी को पालन करना होता है। इस समाज की महिलाएं पति की मौत के बाद दूसरी शादी नहीं कर सकती हैं। उन्हें विधवाओं की तरह ससुराल या मायके में रहना पड़ता है। वे किसी शुभ कर्यक्रम में शामिल नहीं हो सकती हैं और त्योहार भी नहीं मना सकती हैं। इन महिलाओं को नए कपड़े पहनना, चप्पल पहनना और किसी को अपना चेहरा दिखाना भी वर्जित होता है। विधवा महिलाओं को घर में ही रहना पड़ता है। गुना जिले में रहने वाले पारदी समाज की आसपास के चार-पांच गांव में रिश्तेदारियां हैं। यह लोग इन्हीं गांव में

अपने बेटे-बेटियों की शादी करते हैं। पारदी समाज के युवक को शादी काबिल तभी माना जाता है, जब उस पर केस दर्ज होते हैं। नाबालिग रहते ही इस समाज के लड़के चोरी करना सीख जाते हैं। अपराध की दुनिया में कदम रखने के लिए लड़के छोटी-छोटी चोरी की वारदात को अंजाम देते हैं। इसके बाद इनके अपराध का ग्राफ लगातार बढ़ जाता है। पारदी समाज की मान्यता के अनुसार जिस लड़के पर सबसे ज्यादा केस दर्ज होते हैं, वह शादी के लिए उतना ही योग्य वर होता है।

पारदी समाज की कुछ परंपराएं अजीब जरूर हैं, लेकिन कुछ अच्छी चीजें भी हैं। जैसे, इस समाज की महिलाएं चरित्रहीनता सहन नहीं करती हैं। वे खुद इस तरह के कामों से दूर रहती हैं और पुरुषों को भी ऐसा कुछ करने की इजाजत नहीं होती है। इस समाज में दुष्कर्म और छेड़छाड़ जैसी घटनाएं न के बराबर हैं। इन पाबंदियों के बाद भी अगर कोई पुरुष या महिला ऐसी किसी चीज में शामिल पाई जाती है तो उसे सजा भी दी जाती है। कई मामलों में महिलाएं आत्महत्या तक कर लेती हैं।

इस समुदाय के लोग अपराध की दुनिया में काफी सक्रिय रहते हैं। लेकिन, अपराध करने से पहले यह लोग मुहूर्त भी देखते हैं। समाज के ज्यादातर लोग कृष्ण पक्ष में चोरी या डकैती जैसी वारदात को अंजाम देते हैं। ऐसा इसलिए भी किया जाता है क्योंकि कृष्ण पक्ष के दौरान रात में चांद नहीं दिखता है, अंधेरा रहता है। वारदात से पहले यह लोग मौके पर पहुंचकर अपनी कुल देवी की पूजा करते हैं या फिर शौच भी करते हैं। इसके बाद वारदात को अंजाम देते हैं। कृष्ण पक्ष में डकैती या चोरी करने को यह लोग अंधेरी खेलना कहते हैं। पारदी समाज की महिलाएं पुरुषों के साथ अपराध की दुनियां में शामिल रहती हैं। लेकिन, यह खुद किसी वारदात को अंजाम नहीं देती हैं। इनका काम रैकी करना होता है। महिलाएं बड़े शहरों की पॉश कॉलोनियों और चौराहों में रेकी करती हैं।

छोटा सत्र रखकर लोकतंत्र की हत्या कर रही सरकार : सिंघार

» मध्य प्रदेश विधानसभा शीतकालीन सत्र शुरू

» सत्र की अवधि से नेता प्रतिपक्ष नाराज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। मध्य प्रदेश में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार के नेतृत्व में विधानसभा सत्र के पहले दिन कांग्रेस विधायकों ने छिंदवाड़ा में कफ सिरप पीने से हुई मासूम बच्चों की मौत और प्रदेश में बच्चों पर बढ़ते अत्याचार को लेकर विरोध प्रदर्शन किया। विधायकों ने अनोखे सांकेतिक प्रदर्शन में भाजपा सरकार को पूतना बताते हुए बच्चों की सुरक्षा की मांग की। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने विधानसभा पहुंचते ही सरकार पर सवाल उठाने शुरू कर दिए। उमंग सिंघार ने कहा कि सरकार से अनुरोध कि सत्र की अवधि बढ़ाई जाए। अगर सत्र छोटे होंगे तो प्रदेश और देश में लोकतंत्र की हत्या होगी। उन्होंने आरोप लगाते हुए कहा कि सरकार घोटालों से बचना चाह रही है।

आदिवासी वोट काटे जा रहे हैं

इसलिए विधायकों के सवाल बदले जा रहे हैं। स्मार्ट मीटर जबरन लगाए जा रहे हैं। बिजली बिल बढ़ाया जा रहा है। सचिवालय को अब तक 1497 प्रश्न मिले हैं। जिसमें तारांकित 751, अतारांकित 746 प्रश्न, ध्यानाकर्षण 194, स्थगन प्रस्ताव 6, अशासकीय संकल्प 14, शून्यकाल 52 मिले हैं। वहीं नियम 139 की 2 सूचनाएं, 15 याचिकाएं, 2 शासकीय विधेयक प्राप्त हुए हैं। सत्र के दौरान शुरुआत में ही कई पूर्व विधायक, पूर्व सांसद, पूर्व केंद्रीय मंत्री तथा फिल्म अभिनेता एवं पूर्व सांसद धर्मेन्द्र के निधन पर शोक व्यक्त किया जाएगा। इसके अलावा, दिल्ली में 10 नवंबर को हुए कार विस्फोट के मृतकों तथा राजनांदगांव जिले में नक्सली मुठभेड़ में शहीद हॉक फोर्स इंस्पेक्टर आशीष शर्मा को भी श्रद्धांजलि दी जाएगी। नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने आरोप लगाया कि धार सहित आदिवासी बहुल जिलों में योजनाबद्ध तरीके से आदिवासी मतदाताओं के नाम काटे जा रहे हैं। सिंघार ने दावा किया कि धार कलेक्टर ने प्रशासन को मौखिक रूप से एसआईआर फॉर्म रोकने के निर्देश दिए हैं ताकि मजदूरी के लिए बाहर गए आदिवासी मतदाताओं को शिफ्टेड वोटर बताकर सूची से हटाया जा सके।

एसआईआर प्रक्रिया की शिकायतों की जांच हो : दिग्विजय

एसआईआर प्रक्रिया की शिकायतों की जांच के लिए पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह भोपाल के नरेला विधानसभा क्षेत्र पहुंचे। वे मतदान केंद्र क्रमांक 189 पर पहुंचे, जहां स्थानीय कांग्रेस नेता मनोज शुक्ला ने उन्हें मतदाता सूची की खामियां दिखाईं। जिस मकान नंबर 70 पर वे जांच करने पहुंचे, वहां ज्योतिबा फुले शाखा, नवीन नगर संघ कार्यालय का बोर्ड लगा मिला।

एमसीडी के उपचुनाव तय करेंगे भाजपा सरकार की दिशा

» असली मुकाबला तीनों दलों के बड़े नेताओं की प्रतिष्ठा का

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। एमसीडी के 12 वार्डों पर चुनाव संपन्न हो गए। वोटिंग प्रतिशत हांलांकि कम रहा। सभी पार्टियां अपने-अपने जीत के दावे कर रहे हैं। सबसे बड़ी परीक्षा सत्ता पर काबिज भाजपा की होगी। रविवार को हुए उपचुनाव में भाजपा, आप और कांग्रेस के 36 समेत 51 उम्मीदवारों के बीच असली मुकाबला नहीं बल्कि तीनों दलों के बड़े नेताओं की प्रतिष्ठा का है। उपचुनाव परिणाम सीधे तौर पर राजधानी की तीनों प्रमुख पार्टियों के वर्तमान नेतृत्व की क्षमता, पकड़ और विश्वसनीयता का आइना बनेगा। इस कारण तीनों पार्टियों के प्रमुखों ने उपचुनाव में आम चुनाव की तरह ताकत लगाई। इतना ही नहीं मुख्यमंत्री ने भी चुनाव में ताकत लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी क्योंकि उनके मुख्यमंत्री बनने के बाद पहली बार कोई चुनाव हुआ है।

सीएम रेखा गुप्ता समेत 11 पार्षदों के विधायक बनने और कमलजीत सहरावत के पश्चिमी दिल्ली की सांसद के कारण इन 12 वार्डों में उपचुनाव हुआ। इन वार्डों में वर्ष 2022 में नौ में भाजपा व तीन में आप जीती थी। भाजपा और आप ने अपने वार्डों में दोबारा जीत हासिल करने के लिए संबंधित विधायक व सांसद की पसंद के उम्मीदवार उतारे। इस तरह उपचुनाव में जीत सिर्फ संगठन की नहीं बल्कि शीर्ष नेताओं के प्रभाव की भी परीक्षा होगी। दिलचस्प तथ्य यह है कि तीनों दलों के 36 उम्मीदवारों में एक भी कद्दावर नेता नहीं है।

रांची में चला रो-को का जादू

» कुलदीप-हर्षित ने भी बरपाया कहर, भारत ने हासिल की 1-0 से बढ़त

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। भारत ने दक्षिण अफ्रीका को पहले वनडे में 17 रन से हराकर तीन मुकाबलों की सीरीज में 1-0 से बढ़त हासिल कर ली। रांची में खेले गए मुकाबले में भारत ने पहले बल्लेबाजी करते हुए विराट कोहली के शतक और रोहित शर्मा तथा केएल राहुल के अर्धशतकों की मदद से 50 ओवर में आठ विकेट खोकर 349 रन बनाए थे। जवाब में दक्षिण अफ्रीका की टीम 49.2 ओवर में 332 रन ही बना सकी और ऑलआउट हो गई। मेहमानों की तरफ से मैथ्यू ब्रीत्जके (72), मार्को यानसेन (70) और कॉर्बिन बॉश (67) ने अर्धशतकीय पारियां खेलीं। भारत के लिए कुलदीप यादव ने चार विकेट लिए जबकि हर्षित राणा ने तीन सफलताएं हासिल कीं।

लक्ष्य का पीछा करने उतरी अफ्रीका की शुरुआत अच्छी नहीं रही। और महज 11 रन के स्कोर पर तीन विकेट गिर गये थे। इसके बाद मोर्चा टोनी डी जॉर्जी और मैथ्यू ब्रीत्जके ने संभाला। दोनों के बीच 66 रनों की साझेदारी हुई, इसके बाद मैथ्यू ब्रीत्जके, मार्को यानसेन और कॉर्बिन बॉश ने पारी संभालने की कोशिश की, लेकिन भारतीय गेंदबाजों ने अफ्रीकी बल्लेबाजों को उनके मंसूबों में कामयाब नहीं होने दिया। इससे पहले यशस्वी जायसवाल ने भारत को तेज शुरुआत दिलाई थी, लेकिन वह इस लय को बरकरार नहीं रख सके। इसके बाद रोहित ने कोहली के साथ मिलकर 109 गेंदों पर 136 रनों की साझेदारी की।

रोहित बने वनडे में सर्वाधिक छक्के लगाने वाले बल्लेबाज

रांची। रोहित शर्मा वनडे में सबसे ज्यादा छक्के लगाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। इस मैच से पहले रोहित ये उपलब्धि हासिल करने से तीन छक्के दूर थे और उन्होंने मैच में तीन छक्के लगाते ही पाकिस्तान के शाहीद अफरीदी को पीछे छोड़ दिया। पाकिस्तान के पूर्व कप्तान अफरीदी ने अपने वनडे करियर में कुल 351 छक्के लगाए हैं, लेकिन रोहित के नाम अब इस प्रारूप में 352 छक्के हो गए हैं और वह सभी से आगे निकल गए हैं।

सर्वाधिक शतक लगाने वाले बल्लेबाज बने कोहली

कोहली ने अपने वनडे करियर का 52वां और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट का 83वां शतक 102 गेंदों में पूरा किया। इसी के साथ वह किसी प्रारूप में सर्वाधिक शतक लगाने वाले बल्लेबाज बन गए हैं। कोहली से पहले ये रिकॉर्ड सचिन तेंदुलकर के नाम था जिन्होंने टेस्ट में 51 शतक लगाए थे, लेकिन अब कोहली उनसे आगे निकल गए हैं। कोहली 294 पारियों में इस उपलब्धि पर पहुंचे हैं। कोहली वनडे प्रारूप में सर्वाधिक शतक लगाने के मामले में पहले ही सचिन को पीछे छोड़ चुके हैं। सचिन के नाम वनडे में 49 शतक हैं। यह इस साल कोहली का वनडे प्रारूप में दूसरा शतक है। इससे पहले उन्होंने चैंपियंस ट्रॉफी में पाकिस्तान के खिलाफ नाबाद 100 रन बनाए थे। कोहली दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ पहले वनडे मैच में 120 गेंदों पर 11 चौकों और सात छक्के की मदद से 135 रन बनाकर आउट हुए। वहीं कोहली को शानदार प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड से नवाजा गया। इसी के साथ उन्होंने एक और उपलब्धि हासिल कर ली। वह घर में खेले गए मुकाबलों में सबसे ज्यादा बार प्लेयर ऑफ द मैच अवॉर्ड जीतने वाले बल्लेबाज बन गए। इस मामले में उन्होंने सचिन तेंदुलकर को पीछे छोड़ दिया।

खाद्य तेलों के जागरूकता पर आएगी सीरीज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। खाद्य तेलों में अच्छे उत्पादों की जानकारी के लिए जागरूकता का कार्यक्रम किया गया। इसके उपभोक्ताओं के बढ़ते भ्रम और ऑनलाइन प्रसारित हो रही गलत सूचना के बीच पाम ऑयल काउंसिल ने एक नई छह-भाग की पॉडकास्ट सीरीज़ बनाई है। जिसका उद्देश्य भारतीय परिवारों को सोच-समझकर, विज्ञान-आधारित विकल्प अपनाने में मदद करना है। यह सीरीज़ एमपीओसी की पहले की डिजिटल पहलों पर आधारित है, जिन्होंने मलेशियन पाम ऑयल के पीछे के पोषण, विज्ञान और सस्टेनेबिलिटी को सरल बनाकर लाखों भारतीय उपभोक्ताओं तक पहुंच बनाई थी।

पोषण विशेषज्ञ लीमा महाजन को अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। यह पॉडकास्ट रसोई की सुलभ बातचीत को साक्ष्य-आधारित जानकारियों के साथ मिलाता है, जो स्वास्थ्य, आहार वसा, स्थिरता और भ्रामक मार्केटिंग लेबलों पर केंद्रित है।

त्रिशा और गायत्री फिर चैंपियन

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

» सैयद मोदी बैडमिंटन खिताब बरकरार

लखनऊ। मेजबान भारत के लिए सैयद मोदी इंडिया इंटरनेशनल एचएसबीसी वर्ल्ड टूर सुपर 300 बैडमिंटन चैंपियनशिप के फाइनल मुकाबले में महिला युगल में शीर्ष वरीय त्रिशा जॉली और गायत्री गोपीचंद की जोड़ी ने धमाकेदार जीत के साथ खिताब पर अपना कब्जा बरकरार रखा, तो वहीं दूसरी ओर पुरुष एकल में किदांबी श्रीकांत वर्ष 2016 का करिश्मा नहीं दोहरा सके और खिताब की दहलीज पर चूक गए। प्रतियोगिता के मिश्रित युगल में इंडोनेशिया के देजान फर्डिनानस्याह और बर्नाडिन अनिंदिया वारदाना की जोड़ी चैंपियन बनीं, जबकि पुरुष युगल में मलयेशिया के एरन ताय व कांग खाई शिंग ने खिताब अपने नाम किया। महिला एकल में जापान की हीना अकेची नई विजेता बनकर उभरी।

यूपी बैडमिंटन अकादमी में खेली जा रही प्रतियोगिता में महिला युगल फाइनल में भारत की त्रिशा जॉली व गायत्री गोपीचंद और जापान की काहो ओसावा व माई तानाबे के बीच मुकाबला एक घंटे 16 मिनट तक खिंचा, जिसमें त्रिशा जॉली व गायत्री गोपीचंद ने 17-21, 21-13, 21- 15 से जीत दर्ज करते हुए खिताब अपने नाम किया। मुकाबले का पहला गेम 17-21 से गंवाने के बाद त्रिशा व गायत्री की जोड़ी ने शानदार वापसी की और 21-13 की जीत के साथ दमदार वापसी की तीसरे और निर्णायक गेम में भारतीय जोड़ी ने अपनी लय हासिल की और 21-15 से जीत हासिल करते हुए लगातार दूसरे साल यह खिताब जीता। पुरुष एकल का फाइनल भी सांस रोक देने वाला रहा। एक घंटे सात मिनट तक चले रोमांचक मुकाबले में हांगकांग के जेसन गुनावन ने भारत के किदांबी श्रीकांत को 21-16, 8-21-22-20 से पराजित किया।

पायलट ने भजनलाल सरकार को घेरा

» भाजपा सरकार के दो साल के काम-काज पर कसा तंज

» कहा-हमारे प्रोजेक्ट भी पूरे नहीं कर पाए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

टोंक। कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और टोंक विधायक सचिन पायलट रविवार को टोंक दौरे के दूसरे दिन विभिन्न कार्यक्रमों में शामिल हुए। पायलट ने एसआईआर को लेकर मंडल कार्यकर्ताओं की बैठक ली और पार्टी कार्यकर्ताओं व पदाधिकारियों से संवाद किया। जिला स्तरीय अधिकारियों की बैठक लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए। इस मौके पर कांग्रेस जिला अध्यक्ष सऊद सईदी, हंसराज फागना सहित कई नेता मौजूद रहे। सचिन पायलट ने प्रदेश सरकार पर हमला बोलते हुए कहा किदो साल की भाजपा सरकार में विकास कार्य ठप पड़े हैं।

जिन कार्यों का 90 फीसदी काम हमारी सरकार ने पूरा कर दिया था, उन कार्यों की 10 फीसदी फिनिशिंग का काम भी भाजपा सरकार पूरा नहीं कर पा रही है। दौरे के दौरान पायलट ने टोंक सर्किट हाउस में जनसुनवाई की और जनता की समस्याएं सुनीं। इसके बाद मेहंदवास, अमीनपुरा, बरवास, छान, अलियारी सहित कई गांवों का दौरा किया। पायलट ने एसआईआर से जुड़े कामकाज का फीडबैक लिया और ग्रामीणों के साथ संवाद किया। मीडिया से बातचीत में पायलट ने प्रदेश में यूरिया की किल्लत, ब्यूरोक्रेसी में हुए बदलाव, मंत्रिमंडल विस्तार और सरकार के दो साल के कार्यकाल पर भी अपनी प्रतिक्रिया दी।

एसआईआर सर्वे पर होगा आंदोलन

एसआईआर सर्वे पर पायलट ने कहा कि दिल्ली में कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और राहुल गांधी के नेतृत्व में विशाल जनसभा आयोजित की जाएगी। उन्होंने कहा कि वोट चोरी के साथ एसआईआर कांग्रेस के लिए एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। पायलट ने आरोप लगाया कि चुनाव आयोग ने एसआईआर सर्वे को लेकर बहुत कम समय दिया है। उन्होंने कहा कि हमने कई बार समय सीमा बढ़ाने की मांग की, लेकिन निर्वाचन आयोग ने हमारी मांग पर ध्यान नहीं दिया। दबाव के चलते कई राज्यों में बीएलओ आत्महत्या तक कर चुके हैं।

मदनी के बयान पर उठा सियासी तूफान

» केन्द्र सरकार की नींद हराम, चर्चा आम

» कहां से मिली ताकत जो दिया बयान

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। जमीयत उलमा-ए-हिंद के अध्यक्ष मौलाना महमूद मदनी के बयान से सियासी हुक्मरानों की नींद हराम हो गयी है। हालांकि सरकार उनके बयान को अनदेखा कर आगे बड़ने की रणनीति पर अम्ल कर रही है। लेकिन पूरे भारत में उनके इस बयान के चर्चे हैं और हर कोई इस बयान को अपनी परीभाषा में पढ़ रहा है।

गौरतलब है कि अल्पसंख्यक नेतृत्व प्राय: सावधानी से अपनी बात रखता है लेकिन इस बार लहजा और वाक्य दोनों असाधारण है। यह तभी संभव है जब माहौल अनुकूल हो, बैकिंग मजबूत हो, और उद्देश्य स्पष्ट हो। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि इस स्तर के बयान के पीछे केवल व्यक्तिगत भावनाएं नहीं होतीं। बल्कि देश के भीतर कुछ नए समीकरण बनने के संकेत होते हैं। यह बयान महज़ एक टिप्पणी नहीं बल्कि एक राजनीतिक संदेश है।

आखिर कौन कर रहा है मदनी की बैंकिंग

अल्पसंख्यक समुदाय के विभिन्न नेता लगातार इस बात को कह रहे हैं कि उनके अधिकारों को दबाया जा रहा है और बुल्डोजर से डराया जा रहा हैं। लेकिन इस लहजे में किसी ने अभी तक बात नहीं कि जो लहजा मौलाना महमूद मदनी का रहा। सियासी समीक्षकों का भी यही सवाल है कि मदनी ने बिना बैकिंग के इस बयान को जारी नहीं किया होगा और इस हालात में उन्हें पालिटिकल बैंकिंग कहां से मिल रही है। समाजशास्त्री डीके त्रिपाठी कहते हैं कि बीजेपी के भीतर कई गुट बन चुके हैं जो पीएम मोदी की कार्यशैली का विरोध कर रहे हैं। अटल-अडवाणी गुट के नेता इससे पहले भी कई गंभीर मामलों पर पार्टी के भीतर अनुशासन के दायरे में इस बात को उठा चुके हैं लेकिन उनकी नहीं सुनी जा रही। ऐसे में ऐसे ही किसी नेताओं के गुट ने मदनी को आगे कर इस तरह के बयान को दिलवाया है।

राज्यों से लगातार आ रहे हैं विवादित बयान

दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में यह चर्चा ज़ोरों पर है कि भाजपा के भीतर नेतृत्व और नीति को लेकर असहमति के स्वर धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं। ऐसे में यह अटकलें भी सामने आई हैं कि क्या पार्टी के ही कुछ असंतुष्ट प्रभावशाली लोग मौलाना के बयान का इस्तेमाल सरकार के लिए असहज माहौल बनाने के लिए कर रहे हैं? यह संभावना पूरी तरह नकारा नहीं जा सकती। भारतीय राजनीति में जब आंतरिक संघर्ष बढ़ते हैं तो बाहरी आवाज़ें अक्सर दबाव के साधन के रूप में इस्तेमाल होती रही हैं। असम में बिसवा सरकार, राजस्थान में सैनी सरकार, उत्तराखंड में धामी सरकार, मध्य प्रदेश में मोहन सरकार और यूपी में योगी सरकार के मंत्री समय-समय पर विवादित बयान देते आ रहे हैं। यही नही इन राज्यों समेत देश के अन्य कई राज्यों से अल्पसंख्यक समुदाय से रिलेटेड खबरों का आना भी बदस्तूर जारी है।

बेचैनी बयान से ज्यादा समय को लेकर

मौलाना महमूद मदनी का यह बयान ऐसे समय आया है जब चुनावी तैयारियां शुरू हो चुकी हैं। बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक विमर्श संवेदनशील मोड़ पर है और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मानवाधिकार तथा धार्मिक स्वतंत्रता के विषय चर्चा में हैं। इसलिए मदनी का बयान राजनीतिक रूप से सिर्फ़ असहमति नहीं बल्कि रणनीतिक चुनौती है क्योंकि यह सत्ता की सबसे संवेदनशील पोज़िशन हैं जो छवि और चुनावी नैरेटिव को प्रभावित कर सकता है। यह केवल एक बयान नहीं बल्कि संभावित राजनीतिक बदलाव की पहली घंटी है। सरकार इसे अनदेखा बताकर शांत रहने की कोशिश कर रही है लेकिन विशेषज्ञ मान रहे हैं कि यह मामला आगे और बड़ा हो सकता है क्योंकि राजनीतिक परतों में असंतोष मौजूद है। समाजशास्त्रीय सवाल नए रूप में उभर रहे हैं और अंतरराष्ट्रीय समीकरण चुनावी जमीन को प्रभावित कर रहे हैं। मदनी का बयान कहानी का अंतिम अध्याय नहीं शायद यह शुरुआत है। आने वाले महीनों में यह देखा जाएगा कि यह बयान एक इकहरा विवाद साबित होता है या फिर देश की राजनीति में एक नए संदर्भ और नए समीकरणों का आधार बनता है।

विहिप ने की निंदा

विश्व हिंदू परिषद ने भोपाल में मौलाना महमूद मदनी के बयान की निंदा की है। विहिप नेता डा0 सुरेंद्र जैन ने मदनी पर कठोर कार्रवाई की मांग करते हुए मुस्लिम समाज को भड़काने का आरोप लगाया है डा0 जैन ने कहा है कि क्या मौलाना यह नहीं जानते कि कहीं रोटियों पर थूक जा रहा है कहीं लव जिहाद के नाम पर बहनों से बलात्कार कर उनके टुकड़े किए जा रहे हैं।

मदनी ने कहा

मौलाना महमूद असद मदनी ने कहा कि देश की वर्तमान परिस्थितियां काफी संवेदनशील और चिंताजनक हैं। यह कहना बेहद दुखद है कि एक वर्ग विशेष का वर्चस्व स्थापित करने और अन्य वर्गों को कानूनी रूप से मजबूर, सामाजिक रूप से अलग-थलग करने और आर्थिक रूप से अपमानित और वंचित करने के लिए आर्थिक बहिष्कार, बुलडोजर कार्रवाई, मॉब लिंचिंग, मुस्लिम वक्फ संपत्तियों में तोड़फोड़ और धार्मिक मदरसों और इस्लामी प्रतीकों के खिलाफ नकारात्मक अभियान चलाकर नियमित और संगठित प्रयास किए जा रहे हैं।

दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण का मामला सुप्रीम चौखट पर

» शीर्ष कोर्ट बोली- हवा की गुणवत्ता की समस्या गंभीर है और इसे तुरंत हल करें

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में वायु प्रदूषण से बिगड़ते हालात पर आज सुप्रीम कोर्ट में अहम सुनवाई है। सुप्रीम कोर्ट ने बढ़ते प्रदूषण के स्तर को लेकर गंभीर चिंता जताई है। अदालत ने साफ कर दिया कि हवा की गुणवत्ता की समस्या गंभीर है और इसे तुरंत हल करने की दिशा में ऐसे कदम उठाने चाहिए, जिसका प्रभाव लंबे समय तक रहे। साथ ही मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत ने कहा- मुझे पता है कि यह दिल्ली-एनसीआर के लिए खतरनाक समय है।

हमें बताएं कि हम क्या आदेश दे सकते हैं ताकि लोगों को तुरंत साफ हवा मिल सके। सुप्रीम कोर्ट की आज की सुनवाई में यह देखा जाएगा कि तत्काल और दीर्घकालिक उपाय क्या किए जा सकते हैं। कोर्ट की यह पहल नागरिकों की सेहत और दिल्ली-एनसीआर की हवा की गुणवत्ता सुधारने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जा रही है. विशेषज्ञों के अनुसार, दिल्ली-एनसीआर में बढ़ता प्रदूषण न सिर्फ सांस के रोगों को बढ़ाता है, बल्कि बच्चों, बुजुर्गों और अस्वस्थ लोगों के लिए गंभीर खतरा उत्पन्न करता है. सुप्रीम कोर्ट की इस सक्रिय भूमिका से उम्मीद जताई जा रही है कि प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए ठोस रणनीति तैयार की जाएगी।मामले की पिछली सुनवाई में मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अध्यक्षता में सर्वोच्च न्यायालय ने दिल्ली-एनसीआर में बिगड़ते वायु प्रदूषण पर निराशा व्यक्त की और सवाल उठाया कि न्यायपालिका तत्काल राहत के लिए कौन सी जादुई छड़ी इस्तेमाल कर सकती है. मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने इस संकट के कई कारणों पर प्रकाश डाला और केवल अदालती आदेशों पर निर्भर रहने के बजाय सभी कारणों की पहचान और विशेषज्ञों द्वारा संचालित समाधानों का आग्रह किया. हर इलाके के लिए अलग समाधान की जरूरत है. इसके लिए सरकार की बनाई कमेटियों और उनके कामकाज की भी समीक्षा करनी होगी। साथ ही रेगुलर मॉनिटरिंग की प्रक्रिया को मजबूत करना जरूरी है।

जोन-8 निरीक्षण में खुली स्ट्रीट लाइट व्यवस्था की पोल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

इंजीनियरों पर भड़कीं महापौर

लखनऊ। नगर निगम के जोन-8 क्षेत्र में प्रभारी मंत्री सुरेश खन्ना के निरीक्षण के दौरान स्ट्रीट लाइटों में गंभीर खामियां सामने आने पर महापौर भड़क उठीं। चिल्लवा गांव क्षेत्र में कई स्थानों पर लाइटें बंद मिलीं और स्विच बॉक्स खराब पड़े मिले। बताया जा रहा है कि सहायक अभियंता ईशान पांडे और जूनियर इंजीनियर अभिषेक मिश्रा मौके पर हाथ बांधे खड़े रहे, जिससे उनकी लापरवाही साफ दिखाई दी।

महापौर ने मंत्री के सामने ही दोनों अधिकारियों से जवाब तलब करते हुए कड़ा असंतोष व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जनता के टैक्स के पैसों से ही वेतन मिलता है, ऐसी लापरवाही किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। निरीक्षण के दौरान पूरे इलाके में गंदगी मिली तथा कई पोलों पर स्ट्रीट लाइटों की लाइन डायरेक्ट जलती मिली, जो सुरक्षा की दृष्टि से बेहद खतरनाक है। इस पर महापौर ने नाराजगी जताते हुए संबंधित जिम्मेदारों पर कड़ी कार्रवाई करने के निर्देश दिए। महापौर ने जोनल अधिकारी, सफाई एवं खाद्य निरीक्षक और जोनल सेनेटरी ऑफिसर-तीनों का एक दिन का वेतन रोकने के आदेश दिए। उन्होंने जोनल अधिकारी से पूछा कि इस वार्ड का निरीक्षण आपने कब किया था? जवाब मिला कि अब तक सिर्फ एक बार। इस पर महापौर ने फटकार लगाते हुए कहा कि आपको इस जोन में तैनात हुए एक महीना हो गया, लेकिन आप कार्यालय से बाहर निकलकर जनता की समस्याएं देखने तक नहीं जा पा रहे हैं।

प्रभारी मंत्री सुरेश खन्ना ने भी निरीक्षण के दौरान पाया कि स्ट्रीट लाइट व्यवस्था और सफाई तंत्र में कई कमियां बनी हुई हैं, जिन्हें तत्काल सुधारे जाने के निर्देश दिए गए।

सवारियों से भरी स्लीपर बस पलटी

» कई घायल कांच तोड़कर निकले लोग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

झांसी। उत्तर प्रदेश के झांसी में सवारियों से भरी स्लीपर बस पलट गई। ऐसे में बस में सवार लोग कांच तोड़कर बाहर। ये बस दिल्ली से मध्य प्रदेश के सागर जिले में जा रही थी। लेकिन इस बीच झांसी के सीपरी बाजार थाना क्षेत्र के ग्वालियर हाईवे पर ये बस दुर्घटनाग्रस्त हो गई। बस में सवार कई लोग घायल हुए हैं।

बताया जा रहा है कि झांसी में सीपरी बाजार थाना क्षेत्र के ग्वालियर हाईवे पर जाम लगा हुआ था। ऐसे में ड्राइवर ने बस को बैक किया और दूसरी लेन में जाने लगा। इस दौरान ही बस ही बस पलट गई और फिर चीख पुकार मच गई। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस, मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल में भर्ती कराया गया।

बिहार विस की कार्यवाही जारी, नए विधायकों ने लिया शपथ

» तेजस्वी ने सम्राट से हाथ मिलाया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में 18वीं विधानसभा का पहला सत्र आज से शुरू हो गया है। पहले दिन सदन की कार्यवाही शुरू होते ही विधानसभा चुनाव में जीत कर आये सभी 243 विधायक एक-एक कर शपथ ले रहे हैं। प्रोटेम स्पीकर नरेंद्र नारायण यादव सभी को शपथ दिला रहे हैं। डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी और नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने शपथ लिया।

इधर, डिप्टी सीएम विजय सिन्हा ने शपथ लेने के बाद सीएम नीतीश कुमार का पैर छूकर उनसे आशीर्वाद लिया। वहीं आठवीं बार जीतकर सदन पहुंचे प्रेम कुमार ने सदन को नमन किया तब अंदर गए। सदन के अंदर पहली पंक्ति में सीएम नीतीश कुमार के साथ डिप्टी सीएम सम्राट

चौधरी, विजय सिन्हा, मंत्री विजय चौधरी, विजेंद्र यादव, श्रवण कुमार, मंगल पांडेय और दिलीप जायसवाल बैठे हैं। इस बार विधायक अरुण शंकर प्रसाद, सुजीत पासवान, विनोद नारायण झा, आसिफ़ अहमद, माधव आनंद, मीणा कुमारी, नीतीश मिश्रा और सबसे कम उम्र की विधायक मैथिली ठाकुर ने मैथिली भाषा में शपथ ली। वहीं विधायक आबिदुर रहमान, कमरूल होदा, सरबर आलम, विधायक व ॅढ्ढरूढ्ढरू के प्रदेश अध्यक्ष अख्तरुल ईमान और विधायक मुर्शीद आलम ने उर्दू में शपथ ली।

इस बार बदली रही सदन की तस्वीर

इस बार सदन की तस्वीर काफी बदली हुई है। चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को बहुमत मिला। इनके 202 विधायक इस बात जीतकर आये हैं। वही महागठबंधन के 35 विधायक ही इस बार सदन पहुंच पाए हैं। पिछली विधानसभा की तुलना में इस बार विपक्ष संख्या बल में कमजोर है। हालांकि इसके बावजूद विपक्ष के नेता सरकार को गर्ने में कोई कसर छोड़ना नहीं चाहते हैं। इसको लेकर तेजस्वी यादव के नेतृत्व में महागठबंधन की बैठक भी हो चुकी है। विपक्ष बढ़ते अपराध और रोजगार के मुद्दे पर सरकार को गिरने की तैयारी में है।

सदन पूरी तरह से पेपरलेस

इधर, इस बार विधानसभा में कई बड़े बदलाव किए गए हैं। सदन पूरी तरह से पेपरलेस हो गया है। अब विधायकों का सवाल पूछना, जवाब प्राप्त करना, भाषण देना और अन्य सभी काम डिजिटल फॉर्मेट में टैबलेट के माध्यम से होंगे। विधानसभा अध्यक्ष, सचिव और अन्य अधिकारियों को भी टैबलेट दिए गए हैं। विधानसभा अध्यक्ष टैबलेट की मदद से सदन की कार्यवाही संचालित करेंगे। विधानसभा में कुल 243 विधायक अपनी सीट पर टैबलेट का इस्तेमाल करेंगे। उनके भाषण और सवाल पहले ऐप पर अपलोड होंगे, जिन्हें जरूरत के अनुसार सदन में इस्तेमाल किया जाएगा। इस तरह पूरा सदन हाईटेक और आधुनिक बन गया है। ऐसा बिहार विधानसभा में पहली बार हो रहा है। इसके लिए सारी तैयारी पूरी हो चुकी है।

पांच दिसंबर तक चलेगा सत्र

बिहार चुनाव के बाद बुलाए गए सत्र पहले दिन यानी एक दिसंबर को विधायकों का शपथग्रहण होगा। वहीं दो दिसंबर को विधानसभा के अध्यक्ष पद का चुनाव होगा। अध्यक्ष पद की रेस में भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता प्रेम कुमार का नाम सबसे आगे हैं। हालांकि, जनता दल यूनाईटेड इस बार अपने पास विधानसभा अध्यक्ष का पद रखना चाहती है। इस पर मंथन चल रहा है। अगले 24 घंटे के अंदर अध्यक्ष पद पर तस्वीर पूरी तरह साफ हो जाएगी। तीन दिसंबर को राज्यपाल का अभिभाषण होगा। चार दिसंबर को सरकार का फ्लोर टेस्ट और पांच दिसंबर को विनियोग विधेयक पेश किया जाएगा।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। संपादक - संजय शर्मा, विधि सलाहकार: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, वित्तीय सलाहकार: संदीप बंसल, कार्टूनिस्ट: हसन जैदी, दूरभाष: 0522- 4078371 | Email: daily4pm@gmail.com |
website: www.4pm.co.in | RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।